



04 - 2025 में चमकीली बनी रहेगी आर्थिकी



05 - नये चीनी वायरस से पिन्ता में डूबी दुनिया

A Daily News Magazine

इंदौर

मंगलवार, 7 जनवरी, 2025



इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 98, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रु. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)



06 - बजट के उभाव में स्कूलों की मरम्मत नहीं हुई, जर्जर शालाओं में...



07 - स्वास्थ्य सेवाओं का सशक्तिकरण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता...



subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

मलाल है मगर इतना मलाल थोड़ी है ये आंख रोने की शिद्दत से लाल थोड़ी है बस अपने वास्ते ही फ़िक्रमंद हैं सब लोग यहां किसी को किसी का ख़याल थोड़ी है परों को काट दिया है उड़ान से पहले ये ख़ौफ़ ए हिज़ है शौक़ ए विसाल थोड़ी है... मज़ा तो तब है कि हम हार के भी हंसते रहें हमेशा जीत ही जाना कमाल थोड़ी है... लगानी पड़ती है डुबकी उभरने से पहले गुरुब होने का मतलब ज़वाल थोड़ी है....!!

— परवीन शाकिर

द्रौपदी की साड़ी जैसे हैं केजरीवाल के वादे मायावती के भतीजे बोले-ये फेंकते जाएं, हम लपेटते जाएं

नई दिल्ली। (एजेंसी)। बसपा सुप्रिमो मायावती के भतीजे और पार्टी के नेशनल को-ऑर्डिनेटर आकाश आनंद का अरविंद केजरीवाल पर दिया बयान चर्चा में है। आकाश आनंद रविवार को दिल्ली के कोडली में प्रचार कर रहे थे। उन्होंने कहा कि केजरीवाल के वादे ऐसे हैं, जैसे द्रौपदी की साड़ी। ये फेंकते जाएं और हम लपेटते जाएं। आकाश आनंद पहले नेता नहीं हैं, जिन्होंने कोई विवादित बयान दिया है। दिल्ली विधानसभा के चुनाव प्रचार के दौरान कई नेताओं के ऐसे बयान आ रहे, जिन पर विवाद हो रहे हैं। रविवार को ही भाजपा नेता रमेश बिधुड़ी ने प्रियंका गांधी के गालों जैसी सड़क बनाने का बयान दिया था।

छत्तीसगढ़ में नक्सल ब्लास्ट, 8 जवान शहीद

● झाड़वर भी मारा गया, सड़क पर 10 फीट का गड्ढा हुआ ● 25 फीट ऊंचे पेड़ पर मिला गाड़ी का मलबा, कई घायल

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों ने बड़ा हमला किया है। जवानों को ले जा रहे एक वाहन पर ब्लास्ट किया गया। बताया जा रहा है कि पुलिस की टीम नारायणपुर से सर्च ऑपरेशन के बाद लौट रही थी। इस दौरान एक पुलिस वाहन को नक्सलियों ने उड़ा दिया है। शुरुआती जानकारी के अनुसार आठ जवान और एक ड्राइवर शहीद हुआ है। नक्सलियों से यह ब्लास्ट दो बजकर 15 मिनट पर किया है। सभी

शहीद जवान डीआरजी के हैं। बीजापुर में हुए इस हमले ने पूरे राज्य को हिला कर रख दिया है। सोमवार को कुटरू इलाके में नक्सलियों ने जवानों से भरे एक बख्तरबंद गाड़ी को निशाना बनाया। जानकारी के अनुसार, वाहन पर आईडी ब्लास्ट किया गया। इस धमाके में नौ जवान शहीद हो गए हैं। कई अन्य जवान गंभीर रूप से घायल भी बताए जा रहे हैं। बस्तर रेंज के आईजी ने पुष्टि की है।



परियोजना जम्मू-कश्मीर को देश के और हिस्सों के साथ और बेहतर से जोड़ेगी। इसी परियोजना के तहत दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे आर्च ब्रिज चिनाब का काम पूरा हुआ है।



प्रधानमंत्री मोदी ने जम्मू रेल डिवीजन का किया उद्घाटन

कहा-2014 तक 35 फीसदी रेलवे ट्रैक का इलेक्ट्रिफिकेशन था, अब 100 फीसदी के करीब हैं

नई दिल्ली/श्रीनगर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए जम्मू के नए रेलवे डिवीजन और तेलंगाना में चरलापल्ली न्यू टर्मिनल स्टेशन का उद्घाटन किया।



2014 तक देश में सिर्फ 35 फीसदी रेल लाइनों का इलेक्ट्रिफिकेशन हुआ था। आज हम रेल लाइनों के शत-प्रतिशत इलेक्ट्रिफिकेशन के करीब हैं। बीते 10 वर्षों में 30 हजार किमी. से ज्यादा नए रेलवे ट्रैक बिछाए गए हैं। पीएम ने कहा- हमारा जम्मू-कश्मीर आज रेल इंफ्रास्ट्रक्चर में नए रिकॉर्ड बना रहा है। उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लाइन की चर्चा आज पूरे देश में है। ये

से ही बढ़ पाए और अब, पर्यटकों का आना सच में घट रहा है। हम 2019 में 10.9 मिलियन के शिखर पर थे और फिर कभी उस संख्या तक नहीं पहुंचेंगे।

यह अजीब है क्योंकि दुनिया भर में टूरिज्म फल-फूल रहा है। जब भारत में 10.9 मिलियन टूरिस्ट आए, तब भी दुबई, एक अकेला शहर था, जहां 16.7 मिलियन पर्यटक गए। 2024 की पहली छमाही में, दुबई ने 2019 की इसी अवधि की तुलना में 11 प्रतिशत अधिक विजिटर्स को आकर्षित किया, लेकिन उसी अवधि के दौरान, भारत की संख्या में 10 प्रतिशत की गिरावट आई।

बीते दस साल में हमने यह रुख अपनाना शुरू कर दिया है कि भले ही विदेशी यात्री हमारे यहां न आना चाहें, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। भारतीय मध्यम वर्ग आगे बढ़ रहा है। उसे यात्राएं करना पसंद हैं। भारतीय हमारे देश की पर्यटक स्थलों में इस कमी को भर देंगे। यह कुछ हद तक समझ में आता है। स्पेन और फ्रांस जैसे देशों का इतनी बड़ी संख्या में पर्यटकों को लुभाने का बड़ा कारण यह है कि यूरोपीय संघ के भीतर आसान पहुंच उन्हें यूरोपीय लोगों के लिए डोमेस्टिक डेस्टिनेशन की तरह बनाती है और हमारे जैसे देशों के लिए डोमेस्टिक डेस्टिनेशन बड़ा लाभ देता है- यह हालांकि, स्थिर है। विदेशियों को बम विस्फोट या स्वास्थ्य संबंधी किसी खतरे से डर लग सकता है, जैसा कि हमारे साथ पहले भी अक्सर होता रहा है, लेकिन भारतीय यात्रा करते रहेंगे। अमेरिका को ही देख लीजिए। अमेरिकी पर्यटक वीजा लेना आसान बनाने या अपने हवाई अड्डों पर इमिग्रेशन की कतारों को कम करने की कोशिश नहीं करते, इसका एक कारण यह

है कि उन्हें विदेशी पर्यटकों की सच में परवाह नहीं है। संयुक्त राज्य अमेरिका में दो-तिहाई से अधिक पर्यटन उनके अपने देश के यात्रियों से आता है। इसलिए, उन्हें अपने होटलों को भरने या अपने पर्यटक स्थलों को भरने के लिए विदेशी पर्यटकों की जरूरत नहीं है।

अगर आप किसी इंडियन डेस्टिनेशन पर गए हैं (उदाहरण के लिए गोवा या जयपुर) तो आपको पता होगा कि अब भारतीय पर्यटकों की संख्या विदेशियों से कहीं अधिक है। यहां तक कि आगरा में भी, जो पहले विदेशी पर्यटकों पर निर्भर था, आप पाएंगे कि भारतीय पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है। तो, क्या हमें अपनी पर्यटन नीति पर पुनर्विचार करना चाहिए? क्या हमें विदेशियों पर ध्यान देना बंद कर देना चाहिए?

हां और नहीं, क्योंकि समस्या यह है कि भारतीय भी अपने देश के पर्यटन स्थलों से तेजी से दूर होते जा रहे हैं। गोवा इसका एक उदाहरण है। मैं खुद कई सालों तक, मैं हर क्रिसमस और नए साल पर गोवा जाता था। लेकिन पिछले दो सालों से, मैंने जानबूझकर गोवा से परहेज किया। एक प्रमुख कारण लागत है। थाईलैंड गोवा के मुकाबले बहुत सस्ता है। अधिक से अधिक भारतीय शहरों से कई सस्ती उड़ानें हैं और थाई बजट होटल गोवा की तुलना में बेहतर और सस्ते हैं। गोवा में बहुत कम अच्छे लग्जरी होटल भी हैं। ये आमतौर पर बैंकोंक के अधिक संख्या वाले और बेहतर लक्जरी होटलों की तुलना में अधिक महंगे हैं।

श्रीलंका की तरह, अन्य पास की डेस्टिनेशन और भी सस्ती है। इस साल सोशल मीडिया पर वियतनाम की ओर से अच्छा प्रयास किया गया। मैं यह देखकर हैरान हू कि अब यह कितना अच्छा है। और जबकि

गुरु गोबिंद सिंह जी की जीवन यात्रा सभी के लिए प्रेरणादायी : सीएम

स्कूलों में पढ़ाई जाएगी साहिबजादों के बलिदान की गाथा: मोहन यादव



गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर गुरुद्वारा हमीदिया रोड में मथा टेकने के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरु गोबिंद सिंह इस रूप में भी युग और हर काल में उनकी शहादत याद रखी जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सिखों के 10वें गुरु खालसा पंथ के संस्थापक

अपने धर्म और जीवन मूल्यों के लिए बलिदान देने के लिए तत्पर था। गुरु गोबिंद सिंह ने कई आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया। उन्होंने सभी गुरुओं के पवित्र वचनों को एकत्र करते हुए गुरु ग्रंथ साहब को पंथ के मार्गदर्शक का स्वरूप प्रदान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि

साहिबजादों के बलिदान को शालेय पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वीर बालकों की शहादत के दिन, वीर बाल दिवस मनाने का निर्णय लिया। साथ ही ननकानासाहिब कारीखर सहित अनेकों सौगतें समाज को प्रदान की हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरु तेगबहादुर जी के 350वें शहीदी पर्व सहित अन्य आयोजनों में राज्य शासन की ओर से हरसंभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वीर बाल दिवस 26 दिसम्बर के मौके पर गुरुद्वारा हमीदिया रोड की व्यवस्थाओं को संभालने वाले बच्चों का सम्मान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्मृति-चिन्ह भेंटकर अभिवादन किया गया। उन्होंने गुरुद्वार में सेवा भी की और उपस्थित जनसमुदाय का अभिवादन किया। इस अवसर पर सुश्री नेहा बग्गा का सम्मान भी किया गया।

कोरोना जैसे चीनी वायरस का भारत में तीसरा केस

बेंगलुरु (एजेंसी)। चीन में फैले कोरोना जैसे वायरस एचएमपीवी का भारत में तीसरा केस मिला है। अहमदाबाद में सोमवार को 2 महीने के बच्चे में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस का संक्रमण मिला। इससे पहले, सोमवार सुबह कर्नाटक में 3 महीने की बच्ची और 8 महीने के बच्चे में यह वायरस मिला था। दोनों बच्चों की जांच बेंगलुरु के एक अस्पताल में की गई थी। गुजरात के अहमदाबाद में 2 महीने के बच्चे को तबीयत खराब होने पर 15 दिन पहले हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया था। उसे बच्चे को सर्दी और तेज बुखार था। शुरुआती 5 दिन उसे तक वेंटिलेटर पर भी रखा गया था। इसके बाद हुई जांचों में वायरस के संक्रमण का पता चला। कर्नाटक के दोनों केस के बारे में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि बच्चे रूटीन जांच के लिए अस्पताल पहुंचे थे।

पीथमपुर की रामकी फैक्ट्री में खाली किए जा सकेंगे कंटेनर

हाईकोर्ट में एमपी सरकार बोली-गुमराह करने से हालात बिगड़े,अगली सुनवाई 18 फरवरी को

भोपाल। यूनियन कार्बाइड का जहरीला कचरा पीथमपुर में जलाने के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर सोमवार को हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। चीफ जस्टिस सुरेश कुमार कैत और जस्टिस विवेक जैन की डिवीजन बेंच के सामने सरकार ने कहा- मिस लीडिंग से यह स्थिति बनी। हालात बिगड़े हैं। अदालत में मध्यप्रदेश सरकार की ओर से महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने कहा, '3 दिसंबर को हाईकोर्ट ने यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री से जहरीले कचरे को हटाने के लिए चार हफ्ते की



समय-सीमा तय की थी। सरकार को चेतावनी भी दी थी कि अगर निर्देश का पालन नहीं किया गया तो अवमानना की कार्यवाही की जाएगी। इसलिए हमें 6 सप्ताह का समय दिया जाए।' इस तर्क को स्वीकार करते हुए हाईकोर्ट ने सुनवाई की अगली तारीख 18 फरवरी दी है। महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने कहा, हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को आदेश दिया था कि यूनियन कार्बाइड का रासायनिक कचरा वैज्ञानिक तरीके से नष्ट किया जाए। उसी आदेश के अनुसार, राज्य सरकार ने ग्रीन कॉरिडोर बनाकर पुलिस, डॉक्टर और प्रशिक्षित लोगों की टीम के जरिए इसे कंटेनरों में पैक किया और पीथमपुर ले गए। इससे पहले कि इस रासायनिक कचरे को नष्ट किया जाता, पीथमपुर के आसपास जनता ने कानून-व्यवस्था बिगाड़ने की कोशिश की।

मुख्यमंत्री साव बोले-

जल्द छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद का ख़ात्मा होगा- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा, आज आईईडी विस्फोट में हमारे 8 जवान और एक ड्राइवर शहीद हुए हैं। मैं उनकी शहादत को नमन करता हूँ, उन्हें विमन श्रद्धांजलि देता हूँ। उनकी शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी। जिस तरह से लगातार नक्सलियों को परास्त किया जा रहा है, उससे वे हताश हैं और ऐसी कार्रवाइयां हरकतें कर रहे हैं।



प्रयागराज में श्रद्धालुओं को दिखेगा शहर का भव्य स्वरूप

गुमनाम शहीदों की दिखेगी गाथा,रात में रोशन होंगे चौराहे

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज में लगने जा रहे महाकुंभ की विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा ऐतिहासिक आयोजन का स्वरूप इस बार बदला नजर आएगा। मेला क्षेत्र के अलावा शहर की भी नया रूप देने की तैयारी की जा रही है। महाकुंभ 2025 से पहले प्रयागराज अपनी पुरातन महिमा के साथ-साथ आधुनिक चकाचौंध से सजा दिखेगा। इसकी शुरुआत भी हो गई है। प्रयागराज स्मार्ट सिटी लिमिटेड की ओर से संगम नगरी की ऐतिहासिक गरिमा को संजोते

हुए शहर को स्मार्ट बनाने का कार्य किया जा रहा है। ऐसे में यहां आने वाले पर्यटकों और श्रद्धालुओं को अलग ही नजारा दिखेगा। इसको देखते हुए शहर के विभिन्न स्थानों का सौंदर्यीकरण एवं कायाकल्प किया जा रहा है, जिससे आने वाले लोगों को और शहर वासियों को स्मार्ट प्रयागराज का अनुभव हो सके। देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीदों को समर्पित यह शहीद स्मारक स्मार्ट सिटी लिमिटेड की तरफ से 2.5 करोड़ रुपए की लागत से तैयार किया गया है।



रात्रि में प्रयाग की सुंदरता में चार-चांद लगा रहे इलुमिनेशन टावर

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत प्रयागराज में बनाए गए इलुमिनेशन टावर्स शहर में विशेष कर रात्रि के समय आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। इस परियोजना के तहत, 44 लाख रुपए की लागत से बालसन चौराहे पर तीन चमकते हुए टावर स्थापित किए गए हैं। इनमें से दो टावर 7 मीटर ऊंचे हैं, जबकि एक टावर 10 मीटर ऊंचा है। ये टावर्स पूरी तरह एलईडी लाइट से लैस हैं, जिससे सुंदरता तो बढ़ती ही है साथ ही ऊर्जा की खपत में भी कमी आती है। इन टावरों को पूरी तरह से डस्ट एवं वॉटर प्रूफ मटेरियल से बनाया गया है। महाकुंभ जैसे आयोजन को देखते हुए प्रयागराज को आकर्षक और शानदार बनाने के लिए यह टावर स्थापित किए गए हैं, जो शहर की भव्यता को और बढ़ाएं।

संक्षिप्त समाचार

तमिलनाडु गवर्नर ने बिना स्पीच दिए विधानसभा से किया वॉकआउट

- कहा-राष्ट्रगान का अपमान हुआ

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के विधानसभा सत्र के दौरान सोमवार को सदन में हाईलेवल ड्रामा हुआ। राज्यपाल आरपन रवि ने राष्ट्रगान के अपमान का आरोप लगाते हुए अभिभाषण देने से इनकार कर दिया और सत्र बीच में ही छोड़कर विधानसभा से चले गए। इससे पहले फरवरी 2024 में भी वे ऐसा कर चुके हैं। परंपरा के अनुसार, सदन की कार्यवाही शुरू होने पर राज्य गान तमिल थाई वल्लु गाया जाता है और आखिरी में राष्ट्रगान गाया जाता है लेकिन राज्यपाल रवि ने इस नियम पर आपत्ति जताते हुए कहा कि राष्ट्रगान



दोनों समय गाया जाना चाहिए। राज्यपाल के इस व्यवहार पर सीएम स्टालिन ने कहा कि यह बचकाना और लोकतांत्रिक परंपराओं का उल्लंघन है। जब राज्यपाल अपने संवैधानिक कर्तव्यों का पालन नहीं कर सकते, तो वे इस पद पर क्यों बने हुए हैं। यह राज्य के लोगों का अपमान है। राजभवन ने एक बयान में कहा, आज तमिलनाडु विधानसभा में एक बार फिर भारत के संविधान और राष्ट्रगान का अपमान किया गया। राष्ट्रगान का सम्मान करना हमारे संविधान में निहित है।

अपने ही दो बर्खास्त अफसरों को पकड़ नहीं पाई पंजाब पुलिस

कहां हैं डीएसपी गुरशेर सिंह और एआईजी राज जीत हुंडल

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब पुलिस अपने ही भ्रष्ट अधिकारियों को पकड़ने में नाकाम रही है। ये अधिकारी गंभीर अपराधों के आरोपी हैं और फरार हैं। हम बात कर रहे हैं बर्खास्त एआईजी राज जीत सिंह हुंडल और डीएसपी गुरशेर सिंह संधू की। पुलिस की इस नाकामी की कड़ी आलोचना हो रही है। खासकर इसलिए क्योंकि पुलिस ने कुछ अन्य जघन्य अपराधों को कुछ ही दिनों में सुलझा लिया है। पंजाब पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल (मुख्यालय) सुखचैन सिंह गिल ने साल के



अंत में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में पुलिस के कामकाज की तारीफ की थी। उन्होंने कई बड़े मामलों को सुलझाने में पुलिस की सफलता पर जोर दिया लेकिन बर्खास्त एआईजी राज जीत सिंह हुंडल और डीएसपी गुरशेर सिंह संधू को गिरफ्तार करने में पुलिस की नाकामी पर उन्होंने कुछ नहीं कहा। बता दें कि हुंडल दो साल से ज़्यादा समय से फरार हैं। हुंडल को 17 अप्रैल, 2023 को बर्खास्त कर दिया गया था। हुंडल ने जमानत पाने के लिए हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा भी खटखटाया है। वहीं संधू पर गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का आरोप है। उन पर जालसाजी और भ्रष्टाचार के भी आरोप हैं। डीएसपी संधू के बारे में कहा जाता है कि वह विदेश भाग गया है। पंजाब पुलिस ने उसे सेवा से हटा दिया था।

युवा शक्ति की सहभागिता से होगा विकसित भारत का निर्माण : सारंग

प्रधानमंत्री मोदी की उपस्थिति में चयनित दल राष्ट्रीय युवा उत्सव में देंगे प्रस्तुति

भोपाल। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में हमारी युवा शक्ति को प्रोत्साहन देने के निरंतर प्रयास हो रहे हैं। आज का युवा न केवल राष्ट्र का वर्तमान है, बल्कि कल का नेतृत्वकर्ता भी है। विकसित भारत 2047 का सपना तभी साकार होगा, जब हमारे युवा अपनी ऊर्जा, संकल्प और सृजनशीलता को राष्ट्रहित में लगाएं। श्री सारंग ने कहा कि युवाओं को अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों के प्रति भी सजग रहना होगा। देश के प्रति समर्पण की भावना और कर्तव्य का बोध ही वह आधार है, जो हमारे युवाओं को अद्वितीय बना सकता है। मंत्री श्री सारंग सोमवार को भोपाल स्थित तात्या टोपे स्टेडियम में 28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव का शुभारंभ कर संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने विज्ञान प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। यह उत्सव 8 जनवरी तक चलेगा। इसमें प्रदेश के 10 संभागों से 15 से 29 वर्ष की आयु वर्ग के लगभग 350 युवा प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। इस राज्य स्तरीय युवा उत्सव के विजेता 11-12 जनवरी को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव में भाग लेंगे। मंत्री श्री सारंग ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ दें, जिससे मानव जाति उन्हें सदैव याद रखे। युवा उम्र से नहीं जज्जे से होते हैं। युवा शक्ति ही देश में नये आयाम स्थापित करती है।



युवा उत्सव प्रतिभाओं को निखारने में सहायक

समाज और राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की महती भूमिका है। श्री सारंग ने युवाओं को पर्यावरण, पानी और बिजली बचाने का भी संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मेहनत और लगन से ही सफलता अर्जित की जा सकती है। ईमानदारी और अनुशासन के साथ संयम की भी जरूरत है। अपने दायित्व निर्वहन करना ही जिम्मेदारी है। युवाओं में कर्तव्य बोध होना बहुत जरूरी है। सशक्त और संस्कारी युवा ही मध्यप्रदेश और देश की पहचान बनें।

अपर मुख्य सचिव श्री मनु श्रीवास्तव ने कहा कि युवा उत्सव प्रतिभाओं को निखारने में सहायक सिद्ध होगा। युवाओं में युवा उत्सव की भावना केवल उत्सव तक ही सीमित न रहे बल्कि जीवन में ऊर्जा और उमंग के साथ हमेशा बनी रहे। खेल उत्सव का शुभारंभ दीप प्रज्वलन कर सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर समूहों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं।

बीपीएससी कैंडीडेट्स प्रदर्शन में घिरे पीके जाएंगे जेल

● कंडीशनल बेल लेने से कर दिया इनकार, जेल जाने को तैयार

● कोर्ट अपने फैसले पर कायम, कहा- ऐसा प्रदर्शन दोबारा न हो

पटना (एजेंसी)। जनसुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर को जेल भेजने की तैयारी है। उन्हें 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेजा जा सकता है। पटना सिविल कोर्ट के बाहर इसे लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। पटना के गांधी मैदान में आमरण अनशन पर बैठे जनसुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर को पुलिस ने सोमवार सुबह गिरफ्तार किया था। वो 2 जनवरी की शाम 5 बजे से बीपीएससी अभ्यर्थियों के समर्थन में आमरण अनशन पर थे। पटना सिविल कोर्ट में उनकी पेशी हुई। आईजी अरती उपाध्याय की कोर्ट से उन्हें 25 हजार के निजी मुचलके पर



बेल मिल गई है। कोर्ट में पेशी के दौरान प्रशांत किशोर ने खुद बहस की। उन्होंने जज को बताया कि किस तरीके से पुलिसिया बर्बरता की गई। कोर्ट से जमानत मिल गई है, लेकिन प्रशांत किशोर सशर्त जमानत लेने के लिए तैयार नहीं हैं। प्रशांत किशोर बेल बॉन्ड पर साइन नहीं कर रहे हैं। उनकी ओर से जुडिशियल कस्टडी की मांग की गई है। दरअसल कोर्ट ने कहा है कि आगे से ऐसी कोई भी काम नहीं करेंगे जिसकी वजह से आम लोगों को दोबारा परेशानियों का सामना करना पड़े। पीके इसका विरोध कर रहे हैं। जज अपने फैसले पर कायम हैं। इससे पहले आज

सुबह 4 बजे पटना पुलिस ने गांधी मैदान से उन्हें जबरन हटाया। इस दौरान पुलिस को भारी विरोध का सामना भी



करना पड़ा। समर्थक का दावा है कि हटाने के दौरान एक पुलिस वाले ने प्रशांत किशोर को थपड़ भी मारा और

जबरन वहां से उठाकर एंबुलेंस में बैठाया। वीडियो में दिख रहा है कि धरने पर बैठे प्रशांत किशोर को पुलिस उठाने के लिए जोर-जबर्दस्ती कर रही है। इस बीच उनके साथ बैठे बाकी लोग प्रशांत के हाथ-पैर पकड़कर उन्हें पुलिस से बचाने की जद्दोजहद करने लगते हैं। पुलिसकर्मी इन लोगों को खींचकर हटाती है। इस खींचतान के बीच एक कार्यकर्ता प्रशांत को पीछे से आकर पकड़ लेता है। पुलिस उसे हटाने के लिए कार्यकर्ता के सिर पर एक थपड़ मारती है, तभी प्रशांत उसे बचाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाते हैं। इसी आधार पर कार्यकर्ता दावा कर रहे हैं कि पुलिस ने थपड़ प्रशांत किशोर को मारा था। हालांकि, बाद में पुलिस प्रशांत को चारों ओर से घेरकर बैठे कार्यकर्ताओं को हटाती है। जिस चांदर पर प्रशांत बैठे थे, उसे खींचकर हटाती है और प्रशांत को उठाकर ले जाती है। पुलिस ने पहले से प्रशांत किशोर को हटाने की तैयारी कर ली थी।

छत्तीसगढ़ पत्रकार मौत केस

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में सिर पर मिले 15 बड़े निशान

जगदलपुर / बीजापुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में बीजापुर जिले के पत्रकार मुकेश चंद्राकर हत्याकांड का मुख्य आरोपी और मास्टरमाइंड सुरेश चंद्राकर गिरफ्तार हो गया है। चंद्राकर को स्पेशल

इन्वेस्टीगेशन टीम ने 5 जनवरी की देर रात हैदराबाद से गिरफ्तार किया। फिलहाल उससे पूछताछ की जा रही है। आरोपी सुरेश, पत्रकार मुकेश चंद्राकर का चचेरा भाई है। मामले में सुरेश के 3 सगे भाइयों समेत 4 आरोपी पहले ही पकड़े जा चुके हैं। मुकेश की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में सिर पर चोट के 15 निशान मिले

थे। कितनी बुरी तरह हत्या की गई, इसका अंदाजा इसी बात से लगा सकते हैं कि लिबर के 4 टुकड़े मिले, गर्दन टूट गई और हार्ट फट गया था। 5 पसलियां भी टूटी हुई थीं। पोस्टमॉर्टम करने वाले डॉक्टर ने मुताबिक दो या दो से अधिक लोगों ने मुकेश की हत्या की है। मुकेश के शरीर पर इतना तेज चार किया गया है कि शरीर के कई अंग जखमी हो गए। मीडिया से बात करते हुए डॉक्टर ने बताया कि उन्होंने 12 सालों में कभी ऐसा केस नहीं देखा। सुरेश चंद्राकर पेशे से ठेकेदार है और राजनीति से भी जुड़ा हुआ है।



पहले शिवसेना यूबीटी अब शरद पवार की पार्टी ने की तारीफ

महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस का फैन बन रहा है विपक्ष

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की तारीफ विपक्ष कर रहा है। शिवसेना यूबीटी के बाद अब राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी एसपी भी सीएम के कामों की तारीफ करती नजर आ रही है। खास बात है कि यह घटनाक्रम ऐसे समय पर हुआ है, जब पवार परिवार के बीच सुलह की चर्चाएं जोर पकड़ रही हैं। बारामती सांसद और वरिष्ठ



नेता शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले ने कहा है कि सिर्फ फडणवीस ही हैं, जो गंभीरता से काम कर रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, सुले ने फडणवीस के गढ़चिरोली दौरे को लेकर कहा, देवेंद्र फडणवीस पहले दिन से ही एक्शन में हैं। ऐसा लगता है कि वह एकमात्र हैं, जो सक्रिय होकर काम कर रहे हैं।

खराब मौसम के चलते इंदौर डायवर्ट हुई लखनऊ की उड़ान



इंदौर। इंदौर एयरपोर्ट पर एक विमान की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। दरअसल, सुबह लखनऊ में खराब मौसम के चलते हैदराबाद से लखनऊ पहुंचा विमान उतर नहीं पाया और उसे डायवर्ट कर इंदौर लाया गया। मौसम साफ होने के बाद विमान इंदौर से रवाना होगा। इंदौर एयरपोर्ट से मिली जानकारी के अनुसार एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट टुडू 2815 सुबह 5.55 बजे हैदराबाद से रवाना होकर 8.10 बजे लखनऊ पहुंचती है। यह विमान सुबह 6.41 बजे हैदराबाद से रवाना हुआ। लेकिन जब यह लखनऊ पहुंचा तो यहां घने कोहरे के कारण विमान को उतरने की अनुमति नहीं मिल पाई। कुछ देर हवा में चक्कर लगाने के बाद विमान को डायवर्ट कर इंदौर लाने का फैसला लिया गया। इससे पहले भी कई उड़ानें लखनऊ के आसपास के एयरपोर्ट पर भेजी जा चुकी थीं। वहां अतिरिक्त जगह नहीं थी। जिसके चलते यह विमान सुबह 10.18 बजे इंदौर पहुंचा। इसमें 100 से ज्यादा यात्री सवार थे। मौसम साफ होने तक विमान को इंदौर में ही रोके रखने का फैसला लिया गया। साथ ही वापस लखनऊ जाने के लिए रीपयूलिंग भी करवाई गई। लखनऊ में स्थिति सामान्य होने पर विमान ने करीब 12 बजे फिर से उड़ान भरी।

5 फ्लाइट का डिपार्चर 3 घंटे तक लेट- देश में मौसम खराब होने की वजह से हवाई यातायात का शेड्यूल बिगड़ गया है। दूसरे शहरों में कोहरे की समस्या से आज इंदौर से जाने वाली 5 फ्लाइट अपने तय समय से लेट डिपार्चर हुईं।

इंदौर में चाकू से युवक की हत्या

आरोपी कहता था-राज के गैरेज में काम मत कराना, यहीं से विवाद, शव रखकर चक्काजाम



इंदौर। इंदौर के रावजी बाजार इलाके में रविवार रात करीब 12 बजे गैरेज संचालक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने इस हत्याकांड में तीन लोगों को नामजद आरोपी बनाया है। मृतक का नाम राज (25) है, जो गैरेज चलाता था। बताया जा रहा है कि मुख्य आरोपी रोहन लोगों से कहता था कि वे राज के गैरेज पर गाड़ियों का काम न करवाएं, क्योंकि राज ज्यादा पैसे लेता है। इसी वजह से दोनों के बीच हफ्ते भर से विवाद चल रहा था। डीसीपी ऋषिकेश मीना के मुताबिक पुलिस ने हत्या के आरोपी रोहन पिता राजू वर्मा, शुभम पिता राजेश फुलेरिया और प्रतीक पिता राजेश धीमान पर हत्या का केस दर्ज कर गिरफ्तार किया है। इस मामले में मृतक के दोस्त विशाल बनोधा ने एफआईआर दर्ज कराई है। वहीं, वारदात के बाद इलाके के लोगों में काफी गुस्सा है। सोमवार सुबह परिजन के साथ लोगों ने प्रदर्शन किया और आरोपियों को फांसी देने की मांग की। परिवार ने शव रखकर चक्काजाम कर दिया है। एडिशनल डीसीपी आनंद यादव ने लोगों को समझाशा दी, जिसके बाद परिजन माने।

ट्रक की टक्कर से दंपति की मौत

पति पर ट्रक का पहिया चढ़ा, गंभीर घायल पत्नी ने इलाज के दौरान तोड़ा दम



इंदौर। सोमवार सुबह खजराना बायपास पर एक सड़क हादसे में एक दंपति की मौत हो गई। दोनों तुकोगंज इलाके में स्थित रेस्टोरेंट से जा रहे थे, जब उन्हें पीछे से आ रहे ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में दोनों सड़क पर गिर गए, जिसमें ट्रक का पहिया पति के ऊपर से गुजर गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पत्नी को गंभीर चोटें आईं, जिसे एंबुलेंस से एमबाय अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी भी मौत हो गई। खजराना बायपास पर एक सड़क हादसे में एक दंपति की मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक, यह हादसा फीनिक्स मॉल के पास हुआ। मृतक अजय जैन और उसकी पत्नी अंजलि जैन जावरा कपार्ड में रेस्टोरेंट चलाते थे और सुबह रेस्टोरेंट जाने के लिए जा रहे थे।

इंदौर में बब्बर को साबिर-अल्फराज ने छत से मारा पत्थर, अस्पताल में मौत

इंदौर। शनिवार शाम साउथ गाडराखेड़ी में हुए हमले में घायल 50 वर्षीय बब्बर की देर रात इलाज के दौरान मौत हो गई। घटना में शामिल सिकंदराबाद कॉलोनी के निवासी आरोपित साबिर और अल्फराज को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। घटना के बाद इलाके में तनाव बढ़ गया और सुरक्षा के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात करना पड़ा।

झगड़े की वजह- डीसीपी जोन-1 विनोद कुमार मीणा के अनुसार, निगमकर्मों बब्बर का आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के घर आना-जाना था। शनिवार शाम वह शराब के नशे में महिला से विवाद कर रहा था। जब लोगों ने उसे समझाकर दूर किया, तो अल्लू और बिदू ने उसे कॉलोनी से जाने को कहा।

इंदौर में हाई-प्रोफाइल पार्टी में डांस कर ड्रग्स सप्लाई करने वाली लेडी डॉन गिरफ्तार

इंदौर। अपराध शाखा ने जेल प्रहरी और डांसर युवती को गिरफ्तार किया है। दोनों की जोड़ी बड़े पैमाने पर नशीला पदार्थों की सप्लाई कर रही थी। पब, होटल, रेस्टोरेंट और हाई, प्रोफाइल पार्टियों में युवती डांस के बहाने ड्रग्स की पुड़िया बेचती थी।

पुलिस ने 20.30 ग्राम ब्राउन शुगर और 10.22 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की है। एक कार भी जब्त हुई है, जिस पर पुलिस लिखा हुआ है। एडिशनल डीसीपी (अपराध) राजेश दंडोतिया के मुताबिक आरोपित दीपक यावद निवासी मॉडल विलेज कालोनी और 20 वर्षीय श्रुति निषाद निवासी भगतसिंह नगर (बाणगंगा) है।

ब्राउन शुगर और एमडी ड्रग्स बरामद

दोनों शुक्रवार रात एमआर-04 (लक्ष्मीबाई रेलवे स्टेशन के पास) डिलीवरी के लिए पहुंचे थे। पुलिस द्वारा घेराबंदी करने पर कार (एमपी 09 सीयू 8756) लेकर भागे लेकिन जवानों ने एक इंजीनियरिंग कंपनी के समीप रोक लिया। तलाशी में 20.30 ग्राम ब्राउन शुगर और 10.22 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद हुईं।

3 लाख 11 हजार राम नाम लिखकर बनाया राम दरबार

इंदौर की बेटी की पांच महीने की मेहनत लॉकडाउन में खुद से पेंटिंग करना सीखा

इंदौर। इंदौर की 16 साल की अंजनी पोरवाल की राम दरबार की पेंटिंग सभी का ध्यान आकर्षित कर रही है। इस अद्भुत पेंटिंग में अंजनी ने तीन लाख 11 हजार बार राम नाम लिखा है। यह पेंटिंग अपने आप में अद्भुत है। दूर से देखने पर पेंटिंग में सामान्य राम दरबार की तस्वीर लगती है, लेकिन जैसे ही पास से उसे देखा जाता है, तो पता चलता कि इसमें राम नाम लिखा हुआ है। अंजनी 11वीं क्लास की स्टूडेंट हैं और इंदौर के रेवेन्यू नगर में रहती हैं। पेंटिंग बनाने में उन्हें पांच महीने का समय लगा। इस कृति को उन्होंने रणजीत हनुमान मंदिर में भेंट किया है।

लॉकडाउन में पेंटिंग बनाना शुरू किया- अंजनी बताती हैं कि पहले उन्हें पेंटिंग/ड्राइंग का कोई शौक नहीं था, लेकिन लॉकडाउन में खुद से पेंटिंग करना सीखा। धीरे-धीरे उन्हें इसमें रुचि बढ़ी और वह अलग-अलग तरह की पेंटिंग



बनाने लगीं। अंजनी पेन आर्ट, चारकोल आर्ट, पेंसिल आर्ट और पेंटिंग करती हैं। अंजनी के घर में उनकी कई पेंटिंग सजी हुई हैं और जब भी कोई आता है, तो उसे यह लगता है कि यह किसी प्रोफेशनल ने बनाई है।

पांच महीने की मेहनत के बाद हुई तैयार

अंजनी बताती हैं कि राम दरबार की इस तस्वीर को बनाने में उन्हें पांच महीने का समय लगा। अलग-अलग पेन से उन्होंने तीन लाख 11 हजार बार राम का नाम लिखकर राम दरबार बनाया। अलग-अलग पेन के रंगों का समागम देखने में काफी सुंदर लगता है।

अतुल मोदी के आरोपियों की जमानत का इंदौर में विरोध

झण्डे, बैनर्स के साथ नारेबाजी, कहा- समानता का कानून नहीं बना तो भविष्य की स्थिति भयावह



कथन होने के बाद भी एफआईआर दर्ज नहीं किया जाना संविधान का घोर उल्लंघन है।

खास बात यह कि इस प्रदर्शन में समाजसेवी नीलम चावला भी शामिल थीं। उन्होंने बताया कि मैं सत्य की लड़ाई में संस्था पौरुष के साथ हूँ। संस्था पौरुष द्वारा समान कानून की लड़ाई जा रही है जिसका मैं समर्थन करती हूँ। अतुल मोदी ने मृत्यु पूर्व 59 मिनट का वीडियो बनाया, 24 पेजों में प्रताड़ना का

जिक्र किया।

इससे उनके द्वारा झेली गई मानसिक प्रताड़ना का अंदाजा लगाया जा सकता है। अगर पुरुषों के लिए समानता का कानून नहीं बनाया गया तो ऐसे में अभी तो वे आत्महत्या कर रहे हैं, भविष्य में हत्या करने की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। इस पर महिलाओं को भी विचार करना होगा।

इंदौर में मालवा मिल से पाटनीपुरा तक बनेगा ब्रिज



इंदौर, एजेंसी। इंदौर में एमआईसी (मेयर इन कार्डसिल) की सोमवार को बैठक हुई। इंदौर-2 विधानसभा क्षेत्र से जुड़े 2 महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। पहला मालवा मिल से पाटनीपुरा चौराहे तक 6 करोड़ में ब्रिज बनाया जाएगा। इसी विधानसभा को दूसरी बड़ी सौगात के रूप में स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स भी मिला है। 15 करोड़ की लागत से ये ब्रिज नंदा नगर में बनाया जाएगा।

नमामि गंगे प्रोजेक्ट के तहत 417 करोड़ की लागत से कबीटखेडी, बेगमखेड़ी कनारिया और लक्ष्मीबाई तिराहा वीआईपी रोड पर सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट

(एसटीपी) और सीवरेज लाइन डाली जाएगी। इसके लिए महापौर पुष्पमित्र भार्गव की अध्यक्षता में आयोजित एमआईसी की बैठक में सैद्धांतिक सहमति भी दे दी गई। एमआईसी की बैठक में लिए गए निर्णय में 17 करोड़ की लागत से शहर में संपवेल निर्माण की स्वीकृति भी दी गई। बैठक में इंदौर-2 के वार्ड-27 में नंदा नगर रोड नंबर 11 से 30 के बीच खाली पड़ी जमीन पर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स भी बनाया जाएगा। यह 15 करोड़ की लागत में बनेगा। इसे मुख्यमंत्री नगरीय क्षेत्र अधीसंरचना निर्माण के तहत बनाया जाएगा।

13 साल का बेटा घर में सो रहा था



और नकदी उनके ही साथी ने चुरा लिए। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है और उसकी तलाश जारी है। खजराना पुलिस के मुताबिक, शिकायतकर्ता जिशान खान ने अपने दोस्त सलमान उर्फ अशरफ के खिलाफ चोरी का केस दर्ज कराया है। जिशान उत्तर प्रदेश से आकर इंदौर में अपने दोस्तों रिजवान, आमिर और रोजअली के साथ किराए के कमरे में रहता है। वह यहां पीओपी का काम करता है। रविवार

को सभी ने नवाज कॉलोनी में नया कमरा लिया और रात 8 बजे सामान वहां शिफ्ट किया। रात 11:30 बजे सभी सो गए। सुबह 5 बजे जब जिशान उठा, तो उसने अपना मोबाइल और 15 हजार रुपए गायब पाए। बाकी दोस्तों का सामान भी चोरी हो चुका था। सलमान कमरे में नहीं था। उसे फोन करने पर मोबाइल स्विच ऑफ मिला। इसके बाद पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई गई।

1 साल में बिजली पर 9300 करोड़ की सस्मिडी, 48.25 लाख उपभोक्ता ले रहे लाभ

इंदौर में 6.5 लाख उपभोक्ता

इंदौर। मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी वित्त वर्ष के आखिर तक 9,300 करोड़ सस्मिडी देगी। प्रदेश शासन के ऊर्जा विभाग के निर्देशानुसार, मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा प्रत्येक पात्र बिजली उपभोक्ता को नियमित रूप से सस्मिडी का लाभ दिया जा रहा है। जारी वित्तीय वर्ष के दौरान औसतन 48 लाख 25 हजार उपभोक्ताओं को सस्मिडी दी जा रही है। वित्तीय वर्ष के आखिर तक लगभग 9,300 करोड़ रुपये की कुल सस्मिडी दी जाएगी, जिसमें से अब तक करीब



7,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की सस्मिडी दी जा चुकी है। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी की प्रबंध निदेशक रजनी सिंह ने बताया कि ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर के आदेशानुसार, प्रत्येक पात्र उपभोक्ता को सस्मिडी का लाभ दिया जा रहा है। कंपनी क्षेत्र में सबसे ज्यादा इंदौर जिले में साढ़े छह लाख उपभोक्ताओं को सस्मिडी का लाभ दिया जा रहा है। इसके बाद उज्जैन, धार, देवास, खरगोन, रतलाम आदि जिलों में अपेक्षाकृत ज्यादा उपभोक्ताओं को पात्रता अनुसार सस्मिडी दी जा रही है।

केस दर्ज किया है।

पुलिस ने बताया कि इलाके में रहने वाली 11 वी कक्षा की छात्रा ने बताया कि वह खंडवा की रहने वाली है, यहां पढ़ाई करने आई है। उसके गांव में रहने वाली अभिषेक भिलाला यहां रहता है। उससे कुछ माह से मोबाइल पर बात हो रही थी। अभिषेक चार माह पहले उसकी कोचिंग के यहां आया। उसे अपने साथ बाइक पर ले गया। इसके बाद किराये के कमरे में ले जाकर जबरदस्ती करने लगा। इनकार करने पर उसने शादी की बात की। इसके बाद दो से तीन दोस्तों के रूम पर ले जाकर भी रेप किया। इसके बाद आरोपी बार-बार मिलने को लेकर दबाव डालने लगा। उसने कहा कि अगर नहीं मिलेगी तो उसे बदनाम कर देगा। परेशान होकर नानी को पूरी बात बताई।

पढ़ीसी युवक ने घर छोड़ने के बहाने मेट्रो स्टेशन के पास ले जाकर की जबरदस्ती, मामला दर्ज



साथ बाइक पर बैठ गई। तभी वह अपनी बाइक पर बैठाने के बाद एक काम निपटाने का कहने लगा। फिर बाइक से सुपर कॉरिडोर तक ले गया।

यहां मेट्रो स्टेशन के यहां पर अंधेरे में ले जाकर गलत तरीके से टच किया। उसे रोका तो आरोपी ने शरीर पर दातों से कांटा इसके बाद झाड़ियों में जबरदस्ती

धमकाकर ले गया। यहां पर कहा कि अब आवाज सुनने को नहीं आएगा। आयुष ने इसके बाद छात्रा के साथ रेप किया। बाद में उसे धमकाया कि अगर यह बात किसी को बताई तो ठीक नहीं होगा। बाद में बाइक पर बैठकर बड़े गणपति पर छोड़कर चले गया। रात में छात्रा अपने घर पहुंची। जिसमें उसने परिवार को पूरी घटना की जानकारी दी। देर रात छात्रा का मेडिकल कराने के बाद पुलिस ने आरोपी पर केस दर्ज किया है।

नानी के पास रहने आई छात्रा से गांव के युवक ने किया रेप- खंडवा से अपनी नानी के यहां रहने आई एक छात्रा के साथ उसके गांव के परिचित युवक ने दोस्ती कर रेप किया। आरोपी चार माह से उसके साथ जबरदस्ती कर रहा था। छात्रा ने परेशान होकर अपनी नानी को घटना बताई। पुलिस ने मामले में

संपादकीय

महान वैज्ञानिक का अवसान

भारत को विश्व में परमाणु शक्ति का दर्जा दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले जाने माने वैज्ञानिक डॉ. राजगोपाल चिंदंबरम का निधन देश के एक महान वैज्ञानिक का अवसान है। डॉ. चिंदंबरम और उनकी टीम ने जिस गोपनीय तरीके से पोखरण 2 विस्फोट को सफलतापूर्वक अंजाम देकर पूरी दुनिया को चौंकाया, वह अपने आप में अद्भुत कहानी है। 1998 में किए गए इस परमाणु विस्फोट के पीछे भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी को अंडिग इच्छाशक्ति थी, उसी को डॉ. चिंदंबरम ने साकार किया। डॉ. चिंदंबरम ने 88 साल की उम्र में मुंबई में अंतिम सांस ली। भारत के 1974 और 1998 के परमाणु परीक्षणों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) ने उनके निधन की पुष्टि की। डीएई की ओर से जारी बयान में कहा गया कि भारत की वैज्ञानिक और रणनीतिक क्षमताओं में डॉ. चिंदंबरम के अद्वितीय योगदान और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उनके दूरदर्शी नेतृत्व को हमेशा याद किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके निधन पर दुःख जताते हुए कहा कि वह वह भारत के परमाणु कार्यक्रम के प्रमुख वास्तुकारों में से एक थे और उन्होंने भारत की वैज्ञानिक और रणनीतिक क्षमताओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. चिंदंबरम का जन्म 12 नवंबर 1936 को चेन्नई हुआ था और उन्होंने चेन्नई के प्रेसीडेंसी कॉलेज और बंगलूरु के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान से पढ़ाई की थी। वे कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। खास बात यह है कि डॉ.चिंदंबरम ने पोखरण में हुए दोनों परमाणु विस्फोटों में सक्रिय रूप से शामिल थे। पोखरण में भारत ने पहला परमाणु विस्फोट 1974 में किया था, लेकिन स्वयं के परमाणु शक्ति होने की घोषणा नहीं की थी। उस अभियान को 'ऑपरेशन स्माइलिंग बुद्ध' नाम दिया गया था। तब प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी थीं। संभवतः अंतरराष्ट्रीय दबावों के चलते भारत ने सफल परमाणु विस्फोट के बाद भी खुद को परमाणु शक्ति घोषित नहीं किया था। लेकिन 1998 तक आते-आते हालात बदल चुके थे। डॉ. चिंदंबरम की अगुवाई में हुए इस परमाणु विस्फोट को ऑपरेशन शक्ति नाम दिया गया था और सचमुच हमारे काबिल वैज्ञानिक ने भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने में पूरी ताकत झोंक दी। विवादों से दूर रहे वैज्ञानिक डॉचिंदंबरम को भारत सरकार ने 1975 में पद्म श्री व 1999 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें विभिन्न विश्वविद्यालयों ने डॉक्टर को मानद उपाधि से भी सम्मानित किया। वह कई भारतीय और अंतरराष्ट्रीय अकादमिकों के फेलो भी रहे। डॉ. चिंदंबरम का समूचा जीवन इस बात की जमानत है कि समर्पित और ध्येयनिष्ठ होकर देश की सेवा कैसे की जाती है। यही कारण है कि सभी दलों के राजनेतओं ने चिंदंबरम के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

पोखरण-1 – 18 मई, 1974 को कोड नेम 'स्माइलिंग बुद्ध' के तहत किया गया था। इसे आधिकारिक तौर पर 'शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट' (PNE) कहा गया था। भारत सरकार ने घोषणा की थी कि यह परीक्षण भारत को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए किया गया है।

पोखरण-2 – 11 और 13 मई, 1998 को किया गया था। इस परीक्षण को ऑपरेशन शक्ति के नाम से जाना गया था। इस परीक्षण में भारत ने पांच परमाणु परीक्षण किए थे। इनमें से एक 45 किलोटन का तापीय परमाणु उपकरण था, जिसे हवाइजजन बम के नाम से जाना जाता है।

पोखरण परमाणु परीक्षण से जुड़ी कुछ और ख़ास बातें: पोखरण-2 परीक्षण को इतने गुप्त तरीके से किया गया था कि दुनिया को इसकी भनक भी नहीं लगी। इस परीक्षण के दौरान, खेतोलाई गांवा से 5 किलोमीटर दूर फायरिंग रेंज में परीक्षण किए गए थे। इन परीक्षणों से पूरा इलाका गूंज उठा था और आसमान में बादल का गुबार दिखा था।

परिवहन

प्रियंका सौरभ

राजनीति विज्ञान की शोधार्थी

भारत का विमानन क्षेत्र, जो वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है, आर्थिक विकास और कनेक्टिविटी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय के तहत एक मजबूत नियामक ढांचे के बावजूद, कोझीकोड (2020) में एयर इंडिया एक्सप्रेस दुर्घटना जैसी बार-बार होने वाली घटनाएं विमानन सुरक्षा में प्रणालीगत चुनौतियों को उजागर करती हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ तालमेल बिठाने और यात्रियों का भरोसा सुनिश्चित करने के लिए इन मुद्दों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। चिंतनीय स्थिति यह है कि अभी चाहे इंडिगो, स्पाइसजेट और गोएयर जैसी प्राइवेट कंपनियाँ हों या एयर इंडिया जैसी सरकारी कंपनी, लगभग सभी एयरलाइंस वित्तीय मोर्चे पर लगातार संघर्ष कर रही हैं। बोइंग 737 मैक्स विमानों को परिचालन से हटा दिये जाने के कारण स्थिति और भी खराब हो गई है। भारतीय विमानन बाजार में विमान किराए तेजी से बढ़ रहे हैं। इस कारण मध्यम वर्ग के यात्री जो इकोनॉमी क्लास में यात्रा करते थे, वे अब ट्रेन से यात्रा को तरजीह दे रहे हैं।

भारत का विमानन बाजार वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ने वाले बाजारों में से एक है, जिसमें हवाई यात्रियों की संख्या बढ़ रही है और हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे का विस्तार हो रहा है। दिल्ली के टर्मिनल 3 और बेंगलूर के केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे जैसे आधुनिक हवाई अड्डों का निर्माण मजबूत बुनियादी ढांचे के विकास को दर्शाता है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ऑपरेटर्स और विमानों के लिए सुरक्षा अनुपालन और प्रमाणन सुनिश्चित करता है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. ई.फ़्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी

संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय

वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल

स्थानीय संपादक - हेमंत पाल

प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,

Mobile No.: 09893032101

Email- subahsaverenews@gmail.com

‘सुबह सवेरे’ में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं है।

नजरिया

सतीश सिंह

लेखक आर्थिक मामलों के जानकार हैं।

वित्त मंत्रालय ने वित्त-वर्ष 2024-25 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर का अनुमान 6.5 प्रतिशत जताया है। हालाँकि, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर अनुमान को 7.00 प्रतिशत पर बरकरार रखा है, जबकि वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान जीडीपी वृद्धि का 6.5 प्रतिशत के स्तर पर रहने का अनुमान जताया है। वहीं, विश्व बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर के अनुमान को 6.6 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.00 प्रतिशत कर दिया है, जबकि रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए जीडीपी वृद्धि दर के अनुमान को 7.2 प्रतिशत से घटाकर 6.6 प्रतिशत कर दिया है।

वित्त मंत्रालय और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जीडीपी वृद्धि अनुमान को कम करने की वजह वित्त वर्ष 2024-25 में जीडीपी वृद्धि दर में कमी आना है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत रही, जो दूसरी तिमाही में घटकर 5.4 प्रतिशत के स्तर पर आ गई, जो विगत 7 तिमाहियों का सबसे निचला स्तर है। गिरावट का मूल कारण विनिर्माण और खनन क्षेत्र में विकास दर में उल्लेखनीय कमी आना है।

अगर हम पूर्व की कुछ तिमाहियों पर नजर डालें तो वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 12.8 प्रतिशत रही थी और उसी वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 5.5 प्रतिशत, तीसरी तिमाही में 4.3 प्रतिशत और चौथी तिमाही में 6.2 प्रतिशत रही, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही के दौरान जीडीपी वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही थी, वहीं, दूसरी, तीसरी और चौथी तिमाही में यह क्रमशः 8.1 प्रतिशत, 8.6 प्रतिशत और 7.8 रही। इन आंकड़ों से पता चलता है कि भारत सरकार और रिजर्व बैंक की कारण नीतियों की वजह से कोरोना महामारी के दौरान और इसके बाद भी भारत विकास के मोर्चे पर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

अगर हम वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर से भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना करें तो हमारी अर्थव्यवस्था वैश्विक स्तर से बहुत ऊपर है। आज यह दुनिया की प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्था की तुलना में बहुत ही तेजी से आगे बढ़ रही है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के अनुसार 2024 में वैश्विक जीडीपी वृद्धि दर 3.2 प्रतिशत रही और 2025 में 3.3 प्रतिशत रह सकती है, वहीं, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के मुताबिक वैश्विक अर्थव्यवस्था 2024 में 3.1 प्रतिशत और 2025 में 3.2 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है।

चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में चीन की जीडीपी वृद्धि दर 4.6 प्रतिशत रही, जबकि जापान में यह वृद्धि दर

सुधार के बावजूद संकटों से घिरा भारतीय विमानन क्षेत्र

नागरिक उड्डयन महानिदेशालय की वार्षिक सुरक्षा ऑडिट रिपोर्ट एयरलाइनों और हवाई अड्डों के परिचालन मानकों का मूल्यांकन करती है। भारत अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन अनुपालनक

13 पर हस्ताक्षरकर्ता है, जो दुर्घटनाओं की जांच और वैश्विक सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन सुनिश्चित करता है। कोझिकोड दुर्घटना (2020) के बाद, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ने अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन-अनुरूप सुरक्षा ऑडिट किया और सुधारात्मक दिशा-निर्देश जारी किए। प्रमुख भारतीय वाहकों ने सुरक्षा और दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत



सुरक्षा सुविधाओं वाले आधुनिक विमानों को अपनाने हुए अपने बेड़े का विस्तार किया है। इंडिगो एयरलाइंस एयरबस ए320नियो का संचालन करती है, जो ईंधन दक्षता और सुरक्षा उन्नयन के लिए जानी जाती है। 2016 की राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन नीति विकास, क्षेत्रीय संपर्क और विमानन बुनियादी ढांचे में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। उड़ान योजना ने सब्सिडी और प्रोत्साहन के माध्यम से क्षेत्रीय हवाई यात्रा को सुलभ बनाया।

बार-बार होने वाली विमानन सुरक्षा घटनाओं की चुनौतियों में रनवे भ्रम सबसे पहले है। पायलटों को अवसर टेक्सिवे और रनवे के बीच अंतर करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे गलत सतहों पर टेकऑफ़ या लैंडिंग होती है। मोपा घटना (2024) और सुलूर एयर बेस घटना (1993) बार-बार होने वाले रनवे भ्रम को

उजागर करती हैं। उड़ान और ड्यूटी समय विनियमों के अपर्याप्त कार्यान्वयन से चालक दल थक जाता है, जिससे निर्णय लेने और परिचालन सुरक्षा से समझौता होता है। कोझिकोड दुर्घटना में पायलट थका हुआ था, जिसके कारण केप्टन पर बाद की उड़ानों को संचालित करने का दबाव था। एयरलाइंस रनवे मार्किंग और एप्रोच प्रोटोकॉल पर पर्याप्त पायलट प्रशिक्षण प्रदान करने में विफल रही, जिसके कारण बार-बार गलतियाँ हुईं। स्पाइसजेट विमान (2020) को रनवे एप्रोच तकनीकों के अनुचित ज्ञान के कारण कठिन लैंडिंग का सामना करना पड़ा। नागरिक उड्डयन



महानिदेशालय के ऑडिट अक्सर हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे और संचालन में महत्वपूर्ण सुरक्षा अंतराल की पहचान करने या उन्हें सम्बोधित करने में विफल रहते हैं। मुंबई (2019) और हुबली (2015) जैसे हवाई अड्डों पर आवेदन अपर्याप्त सुरक्षा उपायों के परिणामस्वरूप हुए। ऑन-टाइम परफॉर्मेंस पर अत्यधिक जोर पायलटों को सुरक्षा प्रोटोकॉल की अनदेखी करते हुए जोखिम भरे निर्णय लेने के लिए मजबूर करता है। मंगलूर दुर्घटना (2010) दबाव के कारण हुई, जिसमें पायलट ने गो-अराउंड चेतावनियों को खारिज कर दिया।

अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ संरेखित करने के लिए व्यापक सुधार पायलट प्रशिक्षण वृद्धि, एयरलाइंस को रनवे भ्रम और स्थिर दृष्टिकोण जैसे परिदृश्यों के लिए सिमुलेटर-आधारित प्रशिक्षण में सुधार करना चाहिए। सिंगापुर एयरलाइंस ने ताइवान दुर्घटना (2000) के बाद पायलट प्रशिक्षण को संशोधित

2025 में चमकीली बनी रहेगी आर्थिकी

0.9 प्रतिशत रही। आईएमएफ के अनुसार इंग्लैंड में विकास दर वित्त वर्ष 2024 में 1.1 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2025 में 1.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है, वहीं, जर्मनी में वित्त वर्ष 2024 में विकास दर के माइनस 0.1 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2025 में 0.7 प्रतिशत रहने का अनुमान है। दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका से भी भारतीय अर्थव्यवस्था बेहतर स्थिति में है और आगामी सालों में भी इसके मजबूत बने रहने के आसार हैं। वित्त वर्ष 2024 के दौरान अमेरिका में विकास दर के 2.7 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2025 में 2.0 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

जीडीपी अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य को मापने का सबसे विश्वसनीय पैमाना है। इसके तहत एक निश्चित अवधि, जो



समान्यतः 1 वर्ष होता है के दौरान तैयार उत्पाद और सेवाओं की कीमत की गणना की जाती है, जिसमें देश की सीमा के अंदर रहकर जो विदेशी कंपनियाँ उत्पादन करती हैं, उन्हें भी शामिल किया जाता है। जीडीपी दो तरह की होती है। रियल जीडीपी और नॉमिनल जीडीपी। रियल जीडीपी में उत्पादों और सेवाओं की कीमत की गणना आधार वर्ष की कीमत या स्थिर कीमत पर की जाती है, जबकि नॉमिनल जीडीपी की गणना वर्तमान कीमत पर की जाती है।

जीडीपी दर में उतार-चढ़ाव आने के 4 कारक होते हैं। पहला, आमजन द्वारा किया गया खर्च। इस खर्च से अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। दूसरा, निजी क्षेत्र के कारोबार में वृद्धि। मौजूदा समय में निजी क्षेत्र का जीडीपी में 32 प्रतिशत योगदान है। तीसरा है, सरकार द्वारा किया गया खर्च। आज सरकार द्वारा विविध उत्पादों के उत्पादन और सेवा क्षेत्र पर जीडीपी का 11 प्रतिशत खर्च किया जा रहा है एवं चौथा है, निवल मांग। इसके लिए भारत के कुल निर्यात को कुल आयात से घटाया जाता है। फिक्कक, भारत में निर्यात की जगह आयात ज्यादा होता है, जिसका जीडीपी के आंकड़ों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ताजा आंकड़ों के अनुसार वित्त वर्ष 2025 में भारत का

चालू खाता घाटा (सीएडी) जीडीपी के 1.2 से 1.5 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान है। सेवा निर्यात में तेजी और प्रवासी भारतीयों द्वारा बड़ी मात्रा में देश में पैसे अंतरित करने के कारण उच्च व्यापार घाटे के बावजूद, देश का सीएडी वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही में जीडीपी के 1.2 प्रतिशत पर सिमट गया। दरअसल, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) के प्रवाह के कारण पूंजी खाता अधिशेष में वृद्धि हुई, जबकि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आवक अधिक दर्ज किया गया।

फिक्कक, मुद्रास्फीति दर उच्च स्तर पर बनी हुई है, लेकिन कैलेंडर वर्ष 2025 में इसमें कमी आने के आसार हैं। मूडीज ने 2025 और 2026 में भारत में मुद्रास्फीति का



अनुमान 4.5 प्रतिशत और 4.1 प्रतिशत जताया है। अमेरिका में ट्रंप के सत्तासीन होने के बाद वैश्विक स्तर पर अनिश्चितता की स्थिति कुछ कम हुई है, भू-राजनैतिक संकट में भी कमी आने की संभावना है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तनाव कम होने से कच्चे तेल की कीमत में भी कमी आने के आसार हैं। मामले में स्थिति सुधारने में भी लगी है और जापान एवं चीन सहित अमेरिका और यूरोपीय देशों में मुद्रास्फीति नरम हो गई है। भारत में भी नवंबर 2024 में मुद्रास्फीति कम होकर 5.48 प्रतिशत के स्तर पर आ गई, जो अक्टूबर 2024 के 6.21 प्रतिशत के मुकाबले काफी कम है।

अक्टूबर 2024 में मुद्रास्फीति 14 महीनों के उच्च स्तर पर थी, जबकि सितंबर 2024 में यह 5.5 प्रतिशत के स्तर पर थी। मौजूदा समय में भारत में उच्च मुद्रास्फीति के घरेलू कारक जैसे खराब मानसून, भंडारण की कमी, परिवहन की ऊँची लागत आदि ज्यादा जिम्मेदार हैं।

किसी की क्रय शक्ति को निर्धारित करने में मुद्रास्फीति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मुद्रास्फीति बढ़ने पर वस्तु एवं सेवा दोनों की कीमतों में इजाफा होता है, जिससे व्यक्ति की खरीददारी क्षमता कम हो जाती है और वस्तुओं एवं सेवाओं

की मांग कम हो जाती है। फिर, उनकी बिक्री कम होती है, उनके उत्पादन में कमी आती है, कंपनी को घाटा होता है, कामगारों की छंटीनी होती है, रोजगार सृजन में कमी आती है आदि। फलतः आर्थिक गतिविधियाँ धीमी पड़ जाती हैं एवं विकास की गति बाधित होती है। ऐसे में यह कहना समीचीन होगा कि मुद्रास्फीति को कम करने से ही विकास की गाड़ी तेज गति से आगे बढ़ सकती है।

भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार 13 दिसंबर को समाप्त हुए पखवाड़े में ऋण वृद्धि दर 11.5 प्रतिशत रही, जबकि जमा वृद्धि दर भी 11.5 प्रतिशत रही। अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से यह एक अच्छा संकेत है। हालाँकि, विगत महीनों की तुलना में ऋण वृद्धि दर में कमी आई है, लेकिन जमा दर में, ऋण वृद्धि दर के समान वृद्धि होना बैंकों के लिए बेहद ही मुफीद है। इससे उन्हें ऊँची लागत पर पूँजी इकट्ठु करने के लिए मशकत नहीं करनी पड़ेगी और सस्ती दर पर पूँजी उपलब्ध रहने पर बैंक अपनी ऋण पोर्टफोलियो को आसानी से बढ़ा सकेंगे और इससे अर्थव्यवस्था में मजबूती आयेगी।

वैश्विक रेटिंग एजेंसी एस एंड पी द्वारा तैयार एचएसबीसी विनिर्माण पीएमआई नवंबर, 2024 में 58.4 थी, जो अक्टूबर महीने में 58.5 थी। वहीं, सितंबर महीने में यह 56.7 के स्तर पर थी और अगस्त महीने में 57.5 रही थी। भले ही, पीएमआई नवंबर महीने में अक्टूबर महीने से 0.01 कम है, लेकिन यह सितंबर और अगस्त महीने से अधिक है। पीएमआई का 50 से ऊपर रहना यह दर्शाता है कि विनिर्माण और सेवा क्षेत्र में तेजी का रुख बना हुआ है।

साथ ही, तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि अगस्त और सितंबर महीने में विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के प्रदर्शन में गिरावट दर्ज की गई थी। विनिर्माण क्षेत्र के कमजोर प्रदर्शन की वजह से ही चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर कम रही है। हालाँकि, विनिर्माण पीएमआई का सितंबर, अक्टूबर और नवंबर महीने में बेहतर प्रदर्शन रहने से चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर में तेजी आने का अनुमान है।

देश के आर्थिक स्वास्थ्य को मापने के लिए जीडीपी एक महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतक है, जिसे आर्थिक प्रदर्शन का आईना भी कह सकते हैं और इसमें तेजी लाने के लिए मुद्रास्फीति का नियंत्रण में होना, विनिर्माण व सेवा गतिविधियों एवं ऋण वितरण में तेजी आना जरूरी है। ताजा आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि कैलेंडर वर्ष 2025 में मुद्रास्फीति नरम रहेगी, बैंक जमा दर में तेजी आने से ऋण वृद्धि दर में तेजी आने का अनुमान है। इससे आर्थिक गतिविधियाँ में तेजी आयेगी अर्थात विनिर्माण, खनन, सेवा आदि क्षेत्रों में विकास का प्रवाह तेज होगा।

जब समस्या ही समाधान हो

कटाक्ष

अंशु प्रधान

लेखक व्यंग्यकार हैं।

दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं एक तो वे जो समस्याएं सुलझाने में लगे रहते हैं और जिन्दगी में कुछ भी हासिल नहीं कर पाते दूसरे वे जो समस्या पैदा करने की गंभीर तकनीक को जानते हैं ये अपने घर, बाहर, कार्यालय आसपड़ोस सभी जगह समस्या पैदा करने की काबिलियत रखते हैं बस ये दूसरे किस्म के लोग ही आजकल की दुनिया में जिंदा रहने के लायक हैं बस यही पूजनिय हैं बस यही लोग हैं जो जिन्दगी का मजा ले पाते हैं बाकी जो समस्याएं सुलझाने में जीवन बिताते हैं वे तो पूरे गूधे हैं।

ऐसे गर्थों पर कोई न कोई तो अपना बोझा लादता ही है और ये गर्थे इस बोझे को उठाना ही अपना नैतिक कर्तव्य मानते हैं वे सिर झुकाकर यूँ चलते हैं मानों कि वे अपने ही पाप उठाये जा रहे हों और जीवन में यही करने आये हों उनमें निगाह तक उठाने की हिम्मत नहीं होती, ऊपर से सारी जिन्दगी माथापच्ची करते रहते हैं वेो अलग! ये लोग न सिर्फ अपनी समस्याएं सुलझाने में लगे रहते हैं बल्कि आस पड़ोसी, रिश्तेदारों, सबकी मुसीबत अपने गले में डालने को लालायित से रहते हैं।

वहीं दूसरी तरफ वे लोग हैं जिनकी जिन्दगी में समस्या ही प्रधान है, अगर समस्या नहीं तो कुछ भी नहीं! वे समस्या पैदा करने के इतने नुस्खे जानते हैं जितने कि कोई समाधान न जानता हो, उनकी होड़ हमेशा ऐसे लोगों से रहती है जो जीवन को समस्या मुक्त रखने में विश्वास रखते हैं वे मानते हैं कि अगर समस्या नहीं तो कुछ नहीं, कोई वैक्यू नहीं, कोई भय नहीं, कोई इज्जत नहीं!

भाई! लोग जितना गुंडे मवाली की इज्जत करते हैं उतनी थानेदार की करते हैं

क्या? नहीं न !

समस्याएं पैदा करने के बड़े फायदे हैं सबसे पहला फायदा तो ये है कि कोई आपकी असलियत नहीं जान सकता कि आप वास्तविक जीवन में तो एक बड़े वाले भौदू है, दूसरा ये कि लोग बेवजह ही आपको काबिल मानने लगेंगे। जैसे कि अगर आप किसी कार्यालय में हैं और आपको काम नहीं आता तो समस्या पैदा करिए, विद्यालय में हैं और पढ़ना नहीं आता तो समस्या बताइए कि बच्चे कामचोर हैं, दुवई चोर हैं, प्रसाशन में हैं तो अपने से नीचे वालों पर डंडा चलाइये, शिकायतें भिजवाइये ताकि लगे कि आप कितने जिम्मेदार हैं, फलां ही बेकार आदमी है और अगर सरकार में हैं फिर तो कहने ही क्या... फिर तो दुनिया आपको सलाम करेगी, इमली को भी आम कहेगी।

वैसे समस्याएं पैदा करना कम न समझिए, बड़ा दिमाग लगाना पड़ता है। जैसे कि मार्जिन पर टैक्स लगाने से देश की कितनी तरक्की होगी, अपनी तरक्की कितनी होगी, तरक्की होगी भी कि नहीं होगी तो ये ऐसी ही कुछ समस्याएं हैं जोकि समस्याओं की तरह नहीं बल्कि समाधान की तरह आपके जीवन में आती हैं बस ऐसा प्रतीत होता है जबकि दूसरे के लिए वे समाधान ही होती हैं।

वैसे भी आजकल के समय में समाधान मापने नहीं रखता उसमें कौन सी बड़ी बात है? क्या नयापन है? कुछ भी तो नहीं! आजकल तो मायने रखता है समस्यायों को उत्पन्न करते रहना अगर कोई सीधे साधे चल रहा है तो कैसे चल रहा है? अरे! जब तक उसे लंगड़ी फसाकर गिराया नहीं तो कैसी काबिलियत भला! क्या कोई मानेगा कि आप काबिल है? खुद को काबिलियत बनाये रखने के लिए भी समस्याएं पैदा करना सीखिए समाधान तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी बता देगा मगर समस्या कैसे पैदा की जाए ये सिर्फ शांतिर दिमाग ही बता सकता है और कोई नहीं।

अचानक से भावुक हो गए। संस्था के सदस्यों ने उन्हें भावुक होने पर संभाला। वे भावुक होने की कोशिश में अपना सुधबुध ही खो चुके थे। बहुत देर बाद उन्हें चेतना आई। फिर वे अपने आप को पृथ्वी ही पर पाते हैं। पर भावुक होने की इस कोशिश में उन्होंने अपने आप को कुछ पलों के लिए पारलौकिक वातावरण में पाया। उनके लिए यह अद्भुत अनुभव था। जैसे किसी साहित्यकार या फिर किसी समाजसेवी को कोई पद्म पुरस्कार या ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला हो! वे अक्सर ऐसे आयोजनों में भावुक होने की कोशिश में अपना सुधबुध खो बैठते हैं।

उनका भावुक होने की कोशिश करना इतना आसान व सरल कार्य भी नहीं है। यह कला लंबे अनुभव के बाद प्राप्त होती है। जनता का समर्थन चाहिए। श्रोता को भी भावुक होने की आदत हो। बुद्धिजीवी होना पड़ता है। अपने गले व आँखों को इसके लिए तैयार करना पड़ता है। भावुकता के लिए वाणी को साधना पड़ता है। सामने बैठे लोगों का विश्वास जीतना पड़ता है। तब कहीं जाकर आप भावुक होने की कोशिश कर सकते हैं। वैसे वे भावुकता के माध्यम से ही अपनी रोटी संकत है और ना सिर्फ रोटी ही संकत है लेकिन उनकी गाड़ी ही भावुक होने की कोशिश में चलती रहती है..!



सेहत

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।



मानव इतिहास की सबसे बड़ी एवं भयावह महामारी कोरोना को झेल चुकी दुनिया पर एक और नये चीनी वायरस ह्यूमन मेटा-न्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के संक्रमण की खबर ने दुनियाभर को चिंता में डुबो दिया है, बाजार से लेकर सामान्य जन-जीवन तक में डर, खौफ, अफरा-तफरी एवं असमंजस्य का माहौल व्याप्त है। कोविड-19 और अन्य क्षसन वायरस की तरह एचएमपीवी भी खांसने, छींकने और संक्रमित लोगों के निकट संपर्क से उत्पन्न बूंदों या एरोसोल के माध्यम से फैलता है। बुखार, सांस फूलना, नाक बंद होना, खांसी, गले में खराश और सिरदर्द इसके सामान्य लक्षण हैं। लेकिन डॉक्टरों का कहना है कि कुछ मरीजों को इस संक्रमण के कारण ब्रॉकाइटिस और निमोनिया हो सकता है। एचएमपीवी के खिलाफ कोई टीका या प्रभावी दवा नहीं है और इलाज ज्यादातर लक्षणों को प्रबंधित करने के लिए होता है। चीन में सांस की बीमारियों के बढ़ते मामलों की खबरों के बाद, भारत सरकार ने सतर्कता बढ़ा दी है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने डब्ल्यूएचओ से स्थिति पर लगातार अपडेट देने का अनुरोध किया है।

नये वर्ष में प्रवेश की शुभबेला में एकाएक इस महामारी की खबर से दुनिया भौचक्क एवं खौफ में आ गयी है। क्योंकि कोविड-19 महामारी के पांच साल बाद, चीन मौजूदा समय में नए वायरस एचएमपीवी से जुड़ा रहा है। इस वायरस ने चीन में हजारों लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। वहां हालात बेकाबू हो रहा हैं, अस्पतालों के बाहर मरीजों की भीड़ नजर आ रही है। हालांकि, हर बार की तरह चीन का कहना है कि मीडिया खबरों में कोई सच्चाई नहीं है। ये मौसम बदलने का असर है। ठंड बढ़ने से आमतौर पर लोग खांसी-जुकाम की समस्या से जूझते हैं। ये भी मौसम की वजह से ही हो रहा है। चीन के सरकारी ब्रॉडकास्टर सीसीटीवी की रिपोर्ट के अनुसार, दिसंबर के अंत में चीनी सीडीसी के आंकड़ों के मुताबिक 14 वर्ष और उससे कम आयु के मामलों में एचएमपीवी की पॉजिटिव दर में हाल ही में

नये चीनी वायरस से चिन्ता में डूबी दुनिया

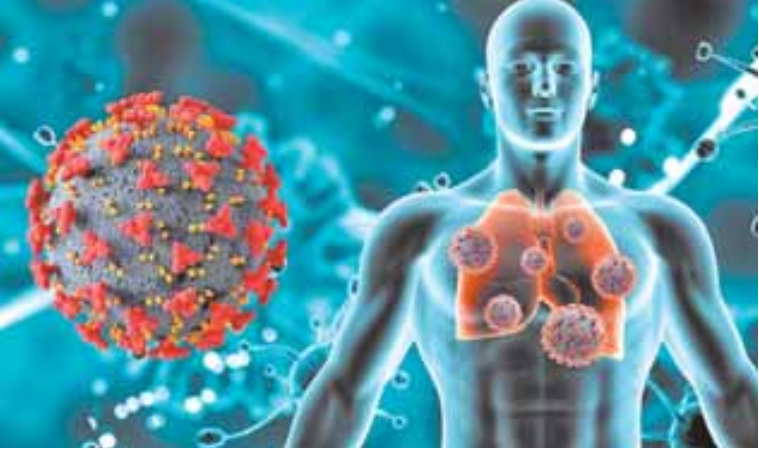
नये वर्ष में प्रवेश की शुभबेला में एकाएक इस महामारी की खबर से दुनिया भौचक्क एवं खौफ में आ गयी है। क्योंकि कोविड-19 महामारी के पांच साल बाद, चीन मौजूदा समय में नए वायरस एचएमपीवी से जुड़ा रहा है। इस वायरस ने चीन में हजारों लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। वहां हालात बेकाबू हो रहा है, अस्पतालों के बाहर मरीजों की भीड़ नजर आ रही है। हालांकि, हर बार की तरह चीन का कहना है कि मीडिया खबरों में कोई सच्चाई नहीं है। ये मौसम बदलने का असर है। ठंड बढ़ने से आमतौर पर लोग खांसी-जुकाम की समस्या से जूझते हैं। ये भी मौसम की वजह से ही हो रहा है। चीन के सरकारी ब्रॉडकास्टर सीसीटीवी की रिपोर्ट के अनुसार, दिसंबर के अंत में चीनी सीडीसी के आंकड़ों के मुताबिक 14 वर्ष और उससे कम आयु के मामलों में एचएमपीवी की पॉजिटिव दर में हाल ही में वृद्धि हुई है। एचएमपीवी वायरस से छोटे बच्चे, वृद्ध और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग ज्यादा प्रभावित हुए है। चीन के साथ ही दुनिया के अनेक हिस्सों से इस महामारी से पीड़ित लोगों की खबरें आ रही है।

वृद्धि हुई है। एचएमपीवी वायरस से छोटे बच्चे, वृद्ध और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग ज्यादा प्रभावित हुए है। चीन के साथ ही दुनिया के अनेक हिस्सों से इस महामारी से पीड़ित लोगों की खबरें आ रही है। भारत में भी चीन का खतरनाक वायरस एचएमपीवी पहुंच गया है। खबरों की मानें तो बेंगलुरु में 8 महीने का एक बच्चा एचएमपीवी वायरस से संक्रमित पाया गया है। बच्चे का ब्लड टेस्ट किये जाने के बाद ये दावा किया जा रहा है। यह भारत में एचएमपीवी वायरस का पहला मामला है। हालांकि, भारत में एचएमपीवी वायरस के मामले की आधिकारिक पुष्टि अभी तक नहीं हुई।

चीन में सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि इन्फ्लूएंजा ए, एचएमपीवी, माइकोप्लाज्मा न्यूमोनिया और कोविड सहित कई वायरस फैल रहे हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि एचएमपीवी मामलों में वृद्धि के कारण अचानक मृत्यु दर में चिंताजनक वृद्धि हुई है तथा 40 से 80 वर्ष की आयु के लोग विशेष रूप से इससे प्रभावित हुए हैं। चीन की जिम्मेदार एजेंसियां इस वायरस के दुष्प्रभाव को घटाने में लगी हैं और यह उम्मीद की जा रही है कि चीन इस रोग पर लगाम लगाने में कामयाब हो जाएगा। चीन अपने यहां कोरोना वायरस पर भी लगाम लगाने में एक हद तक कामयाब रहा था। लेकिन वह दूसरे देशों में उसे फैलने से नहीं रोक पाया। लेकिन इस बार अब यह उम्मीद करनी चाहिए कि सजग चीन मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए अपने यहां से किसी भी संदिग्ध को किसी दूसरे देश की यात्रा न करने दें। साथ ही इस महामारी पर नियंत्रण पाने में जिस विधि एवं

उपचार पद्धति से वह सफलता पाये, उसे समूची दुनिया से साझा करें, ताकि महामारी से महाविनाश का प्रकोप व्यापक न बन सके।

एचएमपीवी का संक्रमण व्यक्तिगत संपर्क से बढ़ रहा है। अगर किसी संक्रमित व्यक्ति के किसी सामान को कोई स्वस्थ व्यक्ति छुए या उसके सम्पर्क में आये तो



संक्रमण का खतरा बताया जा रहा है। यह वायरस चूँकि नया है, तो इसका अभी कोई टीका नहीं है। इसकी कोई एंटीवायरल दवा भी नहीं है। यह अच्छी बात है कि अधिकांश मामलों में लोगों को मामूली समस्याएं आ रही हैं। ज्यादातर लोग लक्षण के अनुरूप उपचार और आराम से ही ठीक होते जा रहे हैं। चीन ने साफ तौर पर कुछ बताया नहीं है, मगर अनुमान यही है कि गंभीर मामलों में लक्षणों को प्रबंधित करने के लिए अस्पताल में भर्ती होने, ऑक्सीजन थेरेपी या कॉर्टिकोस्टेरोइड उपचार की आवश्यकता पड़ सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की

अगर मानें, तो इस वायरस का संक्रमण अल्तूबर महीने से ही बढ़ रहा है। अच्छा यही है कि यह बीमारी मौसमी साबित हो और कम से कम लोगों के जीवन पर असर डाले। कोरोना महामारी तो महाविनाश का कारण बनी थी, एचएमपीवी ऐसा अनर्थ ना करें।

चीन की साख कोरोना महामारी के कारण बहुत गिरी थी, दुनियाभर में लोगों के स्वास्थ्य पर हमला करने वाला चीन दुनिया की नजरों से गिर गया था। आखिर चीन अच्छी-अच्छी वस्तुओं, तकनीक एवं साजोसामान का निर्यात करते-करते महामारियों का निर्यातक क्यों बन गया? स्वास्थ्य एवं वैज्ञानिक क्रांति के लिये अग्रणी चीन अपने यहां आए दिन हो रहे ऐसे संक्रमण को लेकर सजग क्यों नहीं है? अब यह सवाल बिल्कुल जायज है कि वैज्ञानिक या कृत्रिम तरक्की की होड़ में कहीं चीन अपने लोगों के बुनियादी स्वास्थ्य की अनदेखी तो नहीं कर रहा है? कहीं चीनियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता समाप्त या बहुत कम तो नहीं हो गई है?

वे बार-बार किसी-न-किसी प्रकार की महामारी की चपेट में आ रहे हैं और सम्पूर्ण मानव जाति को इससे पीड़ित बना रहे है तो यह गंभीर बात है। क्या इसका बड़ा कारण चीनी लोगों को खान-पान है? जरूरत से ज्यादा सुविधावादी जीवनशैली, कृत्रिम संसाधनों की प्रचुरता एवं अग्राकृतिक जीवन उनकी सेहत पर भारी पड़ रहा है। ध्यान रहे कोरोना महामारी के समय विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका संतोषजनक नहीं थी। कोरोना महामारी की भयावहता के बावजूद वह चीन के प्रति उदार बना रहा। इसलिये एचएमपीवी महामारी के सन्दर्भ

में सवाल उठ रहे हैं कि क्या डब्ल्यूएचओ गंभीरता दिखाते हुए पर्याप्त कदम उठायेगा? क्या उसने कोरोना महामारी के समय चीन से सही सवाल पूछे होते तो इस बीमारी के संभावित खतरे को नियंत्रित किया जा सकता था? क्या कोरोना बीमारी को लेकर विश्व को समय से सलाह न दे पाने में नाकाम रहने के लिए उसे जिम्मेदार माना जाना चाहिए? इस नयी महामारी को लेकर भी इन्हीं कारणों से डब्ल्यूएचओ पर ज्यादा विश्वास कैसे किया जा सकता है? भारत में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक डॉ.अनुल गोयल ने शुक्रवार को कहा कि एचएमपीवी एक सामान्य सांस संबंधी वायरस है जो सर्दी जैसे लक्षण पैदा करता है। कुछ लोगों को, खासकर बुजुर्गों और शिशुओं को, प्लू जैसे लक्षण हो सकते हैं। लेकिन यह कुछ गंभीर या चिंताजनक नहीं है।' डॉ. गोयल ने भले से मनोवैज्ञानिक तरह से एचएमपीवी वायरस को गंभीर न बताकर इसके आतंक को कम कर दिया है, सरकार भी इस महामारी को लेकर सतर्क है, लेकिन फिर भी इस नये वायरस की त्रासदी एवं संकट से जूझ रहे विश्व-मानव को सावधान रहना चाहिए। विभिन्न देशों की सरकारों एवं डब्ल्यूएचओ का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के लोगों के स्वास्थ्य के स्तर को ऊंचा उठाना है। हर ईसान का स्वास्थ्य अच्छा हो और महामारी का शिकार होने पर हर व्यक्ति को अच्छे प्रकार के इलाज की अच्छी सुविधा मिल सके, ऐसे प्रयास करने है। इक्कीसवीं सदी की पहली रजत जयन्ती वर्ष की शुरुआत नये वायरस की महामारी के रूप में एक वैश्विक त्रासदी के साथ होना दुःखद है। ऐसी त्रासदी जो विश्व की बड़ी सत्ताओं को मानव कल्याण की नीतियों को अपनाने एवं ईसान को अपने जीवन मूल्यों और जीवनशैली पर पुनर्चिंतन करने मजबूर कर रही है और उनका आत्मविश्वास एवं मनोबल बढ़ाने की आवश्यकता व्यक्त कर रही है। प्रेषक:

भारत-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट श्रृंखला

शशांक दुबे

लेखक खेलप्रेमी हैं।



अंततः एक दुःस्वप्न की तरह चले भारतीय क्रिकेट के तीन माह लंबे बुरे दौर का समापन हो ही गया। सचमुच कितना कठिन समय था यह! टीम के लिए भी और भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के लिए भी। जब-जब भारतीय टीम बल्लेबाजी के लिए उतरती, बल्लेबाज और कोच से कहीं ज्यादा दिल हम क्रिकेट प्रेमियों का कांपता। विकेट अब गया, तब गया। लंच या टी होने पर ही राहत मिलती, चलो अब कुछ देर विकेट तो नहीं गिरेगा। यह राहत दिन का खेल खत्म होने पर नई चिंताओं, नई आशंकाओं और नई आकांक्षाओं में तब्दील हो जाती। कल क्या होगा? काश! कल ऐसा हो जाए। भारतीय टीम की इस हालत ने अस्सी के दशक (विश्व कप और बेल्सन हेजेस ट्रॉफी जीतने के बावजूद) के उस दौर की याद दिला दी, जब हम टेस्ट क्रिकेट में प्रायः घर और बाहर, दोनों ही जगह हारा करते थे।

लेकिन इक्कीसवीं सदी में टेस्ट क्रिकेट में सौरव गांगुली जैसे कप्तान का प्रादुर्भाव और उनके पीछे सक्षम, समर्थ और विलक्षण खिलाड़ियों की कतार ने हमें जीत का ऐसा चस्का (मीडिया के कांभे पर सवार होकर) लगाया कि अब क्रिकेटप्रेमियों को जीत के अलावा कुछ नहीं चाहिए। लेकिन लगता है, जीत की इस अति भावुक चाह में हम यथार्थ से अंधाई में दूर कर बैठ गए हैं। अक्सर सच्चाईयां कड़वी होती हैं। पहला सच तो यह कि भारत ने 2001 में कलकत्ते में फॉलो ऑन खेलते हुए भी ऑस्ट्रेलिया को हराने के बाद से पिछले साल अपने घर में न्यूजीलैंड से बुरी तरह से हारने के बीच की अवधि में टेस्ट क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण

अफ्रीका की तरह जो समर्थ टीम का रुतबा हासिल किया, उसके कुछ कारण थे। पहला कारण हमारे पास मध्य क्रम में पहले दशक में राहुल द्रविड, तेंदुलकर, वी वी एस लक्ष्मण और गांगुली जैसे और पिछले दशक में कोहली, पुजारा और रहाणे जैसे सशक्त बल्लेबाज थे। इनमें से



कोई आक्रामक था, कोई रक्षात्मक। कोई क्लात्मक तो कोई फटाफट। लेकिन ये सभी एक दूसरे को पूरित करते थे। आज कोहली के फ्लॉप हो जाने के बाद हमारे पास ऐसा कोई बल्लेबाज नहीं है, जो बल्लेबाजी के लिए आते ही 'मैं हूँ ना' जैसा भरोसा जगा सके। इसी प्रकार गेंदबाजी में हमारे पास श्रीनाथ, प्रसाद, जहीर, ईशान्त, शमी जैसे धुआंधार गेंदबाज, तो कुबले, हरभजन, अश्विन, जडेजा जैसे मैच जिताऊ स्पिनर थे। जिस तरह मशीन में चलने वाले दो पहियों को

क्रमशः उनके दांत और उनके बीच का गैप गति देता है, ठीक वैसे ही गेंदबाजी की यह विविधता मैच में प्रतिद्वंद्वी टीम को धराशायी करने की हमारी व्यूह रचना को गति प्रदान करती थी। आज अकेले बुमराह किला लड़ा रहे हैं। उनका सार्थक साथ देने वाला न तो कोई पेसर है, न स्पिनर। ऐसे



में टीम कठिन मैच कैसे निकाले? हालांकि यह बात बार-बार कही जाती है कि परंपरागत क्रिकेट का बंटोधार आईपीएल ने किया है, लेकिन हर बार गावस्कर या कपिल देव या उन जैसे सीनियर खिलाड़ी इस आरोप को खारिज करते हुए कहते हैं कि आईपीएल से नए खिलाड़ियों के लिए अवसरों के नए द्वार खुल रहे हैं। पता नहीं, यह उनकी व्यावसायिक मजबूरी है या समंदर में रहकर मगरमच्छ से बैर न लेने की रणनीति का एक हिस्सा। लेकिन क्या वे यह बता

सकेंगे कि पिछले दस सालों में भारत (और इसी के साथ-साथ पाकिस्तान, बांग्ला देश, श्रीलंका) में टेस्ट क्रिकेट में स्टेडियम खाली क्यों पड़े रहते हैं? जिस इडेन गार्डन या वानखेड़े में कभी एक-एक टिकट के लिए मारा मारी मचा करती थी, वहाँ टेस्ट क्रिकेट में आराम से टिकट मिल जाते हैं। इसकी तुलना में हाल ही में मेलबोर्न में ऑस्ट्रेलिया-भारत के बाक्सिंग डे टेस्ट में पांचों दिन मिलाकर 3 लाख 73 हजार से अधिक टिकट बिके। अपने यहाँ 3 लाख तो छोड़िए दिल्ली में 3000 टिकट भी नहीं बिक रहे। मजे की बात तो यह है कि यही देशवासी आईपीएल के मैचों में चेहरा पोत कर, रंगीन टी शर्ट पहनकर ब्लैक में भी टिकट लेने और अधिकृत टिकट होने के बावजूद पुलिस के डंडे खाने को तैयार रहते हैं। टेस्ट क्रिकेट से मुंह फेर चुके यही दर्शक आज भारतीय टीम के महापतन पर छत्ती-माथा कूट रहे हैं।

दुःख तो इस बात का है कि कुछ ही दिन बाद हमारी इंग्लैंड के साथ वन डे और टी 20 मैचों की श्रृंखला शुरू हो जाएगी और उसके बाद चैम्पियन ट्रॉफी और फिर आईपीएल। इस प्रकार रसातल में पहुँच चुकी एक टीम के पाप कुछ नए तमाशों से धोने या भुलाने की सफल (या असफल) कोशिश की जाएगी। छः महीने बाद जब हम इंग्लैंड से खेलने इंग्लैंड में जाएंगे, तब फिर यही सवाल हमारे सामने पुनः मंडराने लगेगा। क्या तब किसी कोहली या रोहित या राहुल के हटने से या किसी पंत को गैर-जिम्मेदाराना शॉट लगाने के लिए डंपटने से या किसी गंभीर को बलि का बकरा बनाने से हमारी समस्या दूर हो जाएगी? उम्मीद करनी चाहिए, यह प्रश्न हमारे साथ-साथ दुनिया के सबसे अमीर क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के प्रभारियों और उनके अश्वीन कार्यरत चयन समिति के सदस्यों और प्रशिक्षकों के मन में भी घुमड़ रहा होगा।

चायनीज मांझा काट रही जिंदगी की डोर

मुद्दा

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक स्तंभकार है।



नए साल की शुरुआत में ही ऐसी भयावह खबर ने दस्तक दी। अब डर लगता है,सड़क पर चलना। प्रतिबंधित मांझा ने वाराणसी में बाइक सवार का गला रेटा, मौत। दूसरी खबर रेस्टोरेंट संचालक चायनीज मांझा से घायल हुआ। ये कई शहरों में हाल के वर्षों में मासूम से लेकर बड़ों तक की जान ले चुका है। क्या जान लेने वाला प्रतिबंधित मांझा पतंग की दुकानों पर बिक रहा है? चूँकि सुती धागे वाले मांझे से यह मजबूत होता है। यह डिमांड में रहता है। देसी मांझा कम खतरनाक है। डिमांड में नहीं है। क्योंकि चीन का बना हुआ मांझा प्लास्टिक या फिर नायलॉन का बना होता है। पतंग के खेल में देशी मांझे को पटखनी देने वाला मांझा भले ही चोरी-छिपे बेचा जा रहा हो पर बच्चे सबसे ज्यादा इसके मुरीद हैं, हालांकि,वो बिल्कुल नहीं चाहते किसी कीमत पर उनकी पतंग को काटा जा सके। चाइनीज मांझा का कारोबार बड़े शहरों में फल-फूल रहा है। पुलिस घटनाओं के बाद धर-पकड़ करती है, हर साल फिर भी ना जाने कहां से आसमान में उड़कर किसी की भी जीवन की डोर काटने आ धमकती है।

कहते हैं कि चीनी मांझे में 5 तरह के केमिकल और कई धातुओं का प्रयोग होता है। अल्युमिनियम ऑक्साइड और लेड का इस्तेमाल होता है। यह सभी चीजें मिक्स होकर तेज धार वाला ऐसा मांझा बनाती हैं, जिसे कोई नहीं काट सकता, साथ ही इसकी बिक्री अधिक होती है। प्रतिबंध के बावजूद इसका बिकना, दुःखद है। दुकानदार मानवीय पहलू से विचार करें और अपनी अर्न्तिमा में झोंके। तभी इसकी बिक्री पर रोक लग सकता है। केवल पशु-पक्षी ही नहीं, कोई न कोई मनुष्य इसका शिकार हो ही जाता है।

चाइनीज मांझे से मर्डर आए-दिन किसी न किसी शहर में हो जाता है। ये वो जुर्म है जिसमें अचानक आसमान से कल्ल हो जाता है और सबूत के नाम पर सिर्फ एक तेज धार धागा मौजूद मिलता है। जिम्मेदार प्रशासन सख्त कार्यवाही की धरपकड़ कर जैसे अगली घटना तक नींद में न सो जाए। पतंग उड़ाने के लिए सुती मांझों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। लेकिन सूती मांझों में किसी भी तरह का शार्प मेटल, कांच, निपचिपा पदार्थ, मांझों को सीधा रखने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सामान का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। अपने मजे के लिए दूसरों का जीवन खतरे में डालना न्याय संगत नहीं है। बच्चों को समझाया जाना चाहिए कि यह सिर्फ पतंग ही नहीं, बल्कि चायनीज मांझा काट रही जिंदगी की डोर भी।

पुस्तक समीक्षा

विवेक कुमार मिश्र

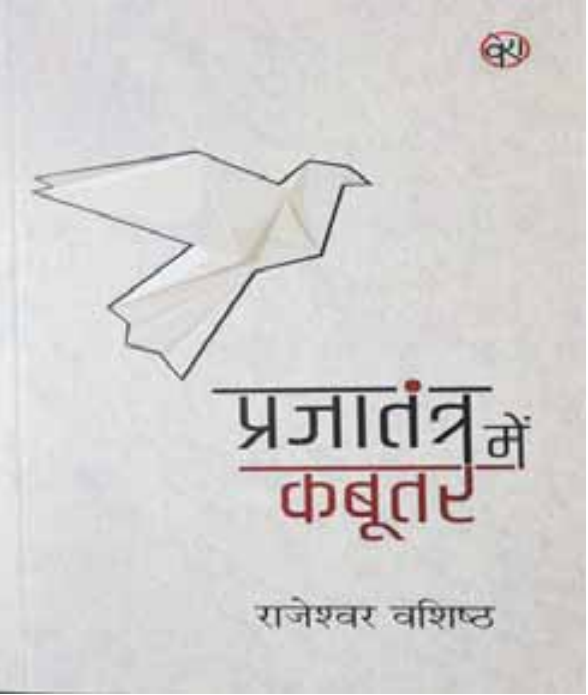
समीक्षक हिंदी के प्राध्यापक हैं।



सुनेत्रा, बुनो कोई गीत किसी चिड़िया की तरह प्रेम करते हुए जीने से अनूठा कोई दूसरा काम नहीं है सृष्टि में। सृष्टि के रहस्य और संसार को जानना ही सर्जना का भी क्षण होता है। जो सुजन में है, जो जीवन रत है वह निश्चित ही प्रेम में डूबा होगा और यह संसार इस प्रेम की ही उपलब्धि है। इस उपलब्धि को पाने के लिए... जीवन के घाट से चलते हुए संसारी बातों, किस्से कहानियों, एक दूसरे से समय के पार जाकर बतियाने की ज़िद ही किसी कविता संग्रह को इस तरह की स्वीकार्यता और पठनीयता सौंपती है कि बार-बार कविताओं को पढ़ने के बाद भी बहुत कुछ झूट जाता है कुछ उसी तरह जैसे कि कहाँ कोई भी एक बार में जीवन जीता है। यहाँ सुनेत्रा है, पहाड़ है, पेड़ हैं, नदियां हैं समुद्र है और वह पूरा कोलाहल है जिससे संसार बनता है वह शहर वह नगर और महानगर है जिससे हमारी उपस्थिति सिद्ध होती है और इन सबके बीच से जीवन समर में प्रेम को जीते हुए चलते राही यात्री और सह यात्री हैं। सही मायने में कहें तो राजेश्वर वशिष्ठ का प्रजातंत्र में कबूतर जीवन प्रेम का महाख्यान है और इसे इसी रूप में पढ़ा जाना चाहिए । यह संग्रह प्रेम की अनूठी छवियों को रचते गढ़ते आगे बढ़ता है । यदि इस संग्रह को किसी एक रूपक से समझने की कोशिश करें तो नदी का रुपक सामने आ जाता है । जिस तरह नदी अपने उदगम स्थल से निकलकर हह्योते इठलाते

प्रजातंत्र में कबूतर : जीवन प्रेम का महाख्यान

इतराते समुद्र की ओर बिना रुके भागती रहती है वैसे ही प्रेम भी अपने हृदय स्रोत से निकल कर उसी हृदय में समा जाने के लिए बिकल हो चलता ही रहता है । इस क्रम में जीवन संसार के हालात और संघर्ष अपनी जगह पर बने रहते हैं और इस सबके बीच जीवन जीना किसी बड़े संघर्ष की ओर संकेतित करने जैसा ही है। राजेश्वर वशिष्ठ का कवि मन अंततः प्रेम का कवि मन रचता है और उसी स्थिति में समाज की स्थितियों विसंगतियों और हालातों का न केवल अध्ययन करता चलता है बल्कि इस स्थिति में कैसे कोई भी चलेगा और कहाँ तक चलेगा का निर्णय भी उनका कवि लेता रहता है। कविता संग्रह पांच खंडों में - गोमती से गणेश, निर्मल हृदय, प्रजातंत्र में कबूतर, सुनेत्रा! तुम ही बसंत हो और इस वेलेटाइन डे पर... सुविधा के लिए और एक नाम देने के लिए रखा गया है पर पूरा संग्रह संसार की तरह ही अनंत घुमाव के बाद प्रेम के घाट पर थिर मिलता है उसी तरह इस संग्रह की कविताएं आपको पूरी दुनिया की यात्रा प्रेम के धागे के साथ बांधकर करती हैं। यहाँ संघर्ष, हालात और विसंगतियों को न केवल सामने रखा गया है बल्कि कवि इन हालातों में अपनी यात्रा जारी करते हुए प्रेम की जो दृश्यता और सिद्धता रचता है वह इस संग्रह का मानव सभ्यता के लिए कमाया गया सत्य और तथ्य है। यहाँ कवि गोवर्धन पूजा के द्वारा लोक संस्कृति के रक्षण में श्रीकृष्ण की उपस्थिति और मानव विश्वास से सभ्यता के संघर्ष और संघर्ष को रखा गया है । आगुदा के समय में आत्मविश्वास ही बनता है छतरी



जो हमें बचाता है भीमने से आज गोवर्धन पर्वत ही हमारी छतरी है । कवि जिस प्रेम की नदी से अपनी नौका को लेकर चलता है वह बहुत गहरे जीवन की डोर से बंधी हुई है। यहाँ समुद्र से ऊंची उठने वाली लहरें भी हैं और हालात के चढ़ान

भी है पर इन सबके बावजूद प्रेमिल दुनिया का ऐसा महापर्व इस संग्रह में पहली कविता से लेकर आखिरी कविता तक इस तरह चलता है कि कहना पड़ता है कि जीवन है और यदि जीवन को सही ढंग से जीने की इच्छा है तो आपको इच्छा की नदी यानी कि प्रेम की नदी के इस पार से उस पार होते हुए उस समुद्र में भी जाना होगा जो जीवन के किनारे से ही उगता है। पेड़! तुम सोते रहना शताब्दियों तक मानवता के प्रति भूल कर अपना दायित्व। भूल जाना तुमसे प्यार किया था किसी चिड़िया ने। प्रेम की स्थितियों, उसके घुमावदार चक्र और इस पूरी प्रक्रिया में मन मस्तिष्क कितना लहलुहान होता है - इसका साक्षात्कार किया जा सकता है। किसी भी कविता को कहीं से भी उठाकर पढ़ना शुरू कीजिए वह आपको प्रेम की नदी में स्नान करा कर ही रहेगा । यह इस संग्रह की उपलब्धि है। सुनेत्रा यहाँ कथा पात्र और जीवन पात्र साथ साथ है । कोई साथ चलें या न चलें पर हर मोड़ पर सुनेत्रा है और सुनेत्रा के साथ ही कदम रुकते या बढ़ते हैं। सुनेत्रा, देखो तो आज पेड़ पुरुष की तरह सोचने ही प्रेम की बाजी हार गया। प्रेम में होना या प्रेम की बाजी हार जाना और जीवन स्थितियों की यातना से गुजरना कोई यूं ही कहनी नहीं है कि सुनाया और चल दिया। प्रेम की कथा न सुने सुनी जाती है न ही सुनाना आसान होता है पर सभ्यता और संस्कृति के

सारे संदर्भों में यदि कोई एक तत्व प्राण के रूप में है तो वह प्रेम ही है जिसे प्रजातंत्र में कबूतर संग्रह के द्वारा समाज, संसार नीति और राजनीति सभी राहों से गुजारते हुए सिद्ध किया गया है। सुनेत्रा, इस छल-छद्म से भरी दुनिया में बस, तुम ही प्रेम हो। कवि राजेश्वर वशिष्ठ ने बड़े साफ शब्दों में कहा है कि इस छल-छद्म भरी दुनिया में यदि दुनिया को जीने लायक कुछ बनाता है तो वह प्रेम ही है। प्रेम से अलग हटकर हम संसार के लिए, स्वयं के लिए और सभ्यता मात्र के लिए कुछ नहीं कर सकते। यदि कुछ महनीय और मूल्यवान है तो वह प्रेम ही है जिसपर सभ्यताएं टिकी हैं। सुनेत्रा, प्रेम अमृत घट है सृष्टि और मानव सभ्यता के निर्माण में। किसी भी संग्रह की यह उपलब्धि भी हो सकती है कि संग्रह की पहली कविता से लेकर आखिरी कविता तक अंत संतुला के रूप में प्रेम की बातें यदि जलती रहे तो वह निजी और सार्वजनिक व सामाजिक आश्रित को भी जन्म देती है कि संसार को अभी भी रचने और गढ़ने के लिए सारे तकनीकी संजाल और मशीनरी के बावजूद सीधा साधा मानव प्रेम ही है जो अंततः बचायेगा। प्रजातंत्र में कबूतर (कविता संग्रह) - राजेश्वर वशिष्ठ वेरा प्रकाशन, जयपुर मूल्य - 200

छात्रों के भविष्य को सुरक्षित करने सरकार प्रतिबद्ध: उप मुख्यमंत्री

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि प्रदेश सरकार छात्रों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए संकल्पित है। परीक्षाओं का आयोजन सुनियोजित और निष्पक्ष प्रक्रिया के अंतर्गत किया जा रहा है ताकि छात्रों को उनकी मेहनत का सही परिणाम मिल सके। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि विधिवत परीक्षाओं का आयोजन और समय से परिणाम जारी किये जायेंगे।

उल्लेखनीय है कि मई-2024 से सितंबर-2024 के बीच आयोजित परीक्षाओं में बैच 2019-30, 20-21 और 21-22 के कुल 47,945 विद्यार्थी सम्मिलित हुए। इनमें B.Sc नर्सिंग थर्ड ईयर परीक्षा (मई-2024) में 8,293 विद्यार्थी उपस्थित हुए, जिनमें से 86.2% छात्र सफल रहे। इसी तरह, B.Sc नर्सिंग फर्स्ट ईयर परीक्षा (मई-2024) में 15,787 विद्यार्थी शामिल हुए, जिनमें से 74.7% विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। P.B.B.Sc नर्सिंग फर्स्ट ईयर परीक्षा (मई-2024) में 4,601 विद्यार्थी उपस्थित हुए, जिनमें 65.3% सफलता दर रही। इसके अलावा, M.Sc नर्सिंग फर्स्ट ईयर परीक्षा (मई-2024) में 1,612 विद्यार्थी शामिल हुए, जिनमें से 80.4% छात्र पास हुए। सितंबर 2024 में बैच 21-22 के बी.एससी नर्सिंग फर्स्ट ईयर के 13 हजार 106, पीबीबीएससी नर्सिंग फर्स्ट ईयर में 2 हजार 980, और एमएससी नर्सिंग फर्स्ट ईयर में 1 हजार 66 विद्यार्थी परीक्षाओं में शामिल हुए। इन परीक्षाओं के परिणाम भी जल्द घोषित किए जाएंगे। बैच 2022-23 के विद्यार्थियों की परीक्षाएँ मार्च 2025 में आयोजित की जाएंगी जिनमें 25 हजार विद्यार्थी शामिल होंगे।

पार्षद का अल्टीमेटम, श्वान को पकड़ो नहीं तो धरना देंगे

नर्मदापुरम। कमिश्नर कॉलोनी में एक कुत्ते ने पिता-पुत्र सहित एक महिला और अन्य को काटा, कुत्ते के काटने से पंकज मेहरा, समता श्रीवास्तव, गौरव दुबे, ब्यान मेहरा घायल हुए घायल हुए सभी लोग जिला अस्पताल इलाज करने पहुंचे।

सुहृद घटी इस घटना पर सक्रिय हुए वार्ड नंबर 12 के पार्षद पति और पार्षद की सक्रियता देखने लायक रही जो प्रशंसनीय कही जायेगी, इधर कुत्ते को एक घंटे के अंदर पकड़ने का अल्टिमेटम देकर समय सीमा में कृता नहीं पकड़ने पर पार्षद पूजा मालवीय ने धरना पर बैठ जायेंगी घोषित किया और उधर उनके पति अर्पित मालवीय ने सोशल मीडिया पर सभी को हिला डाला। फिर क्या था इस मामले को लेकर न केवल प्रशासन हरकत में आया बल्कि विधायक जी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा डाली। तुरंत नगरपालिका की टीम ने लोगों को काटकर परेशान करने वाले कुत्ते को पकड़ दिखाया, विधायक जी के निर्देश का पालन तुरंत नगरपालिका ने कर दिखाया जिससे क्षेत्र वासियों ने राहत की सांस ली।

पार्षद पूजा अर्पित मालवीय ने इस त्वरित कार्रवाई के लिए सभी का धन्यवाद जापित किया.. काश विधायक जी नगर की व्यवस्थाओं के लिए इतनी ही तन्मयता और सक्रिय भूमिका निभाकर प्रशासन सहित नगरपालिका को गतिशील कर पाते..

वेतन रोकने के आदेश से भड़के पंचायत सचिव, रोजगार सहायक, सौपा झापन

काम बंद, कलम बंद कर न्यायालय में जाने की दी चेतावनी

देवास। जिले कि जनपद पंचायत देवास बागली, टोकखुर्द सोनकच्छ कन्नौद खोतेगांव की ग्राम पंचायतों में कार्यरत ग्राम पंचायत सचिवो/रोजगार सहायको के माह दिसम्बर के वेतन के भुगतान पर अनिश्चितकाल के लिये रोक लगाकर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत देवास द्वारा निर्देशित किया गया है कि देवास जिले कि ग्राम पंचायतों में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार ग्यारंटी योजना में मजदूरी भूगतान 50 प्रतिशत से अधिक नहीं होने के कारण से पदस्थ पंचायत सचिवो और रोजगार सहायकों को वेतन से वंचित कर दण्डित किया गया है।

इस संबंध में मप्र पंचायत सचिव संगठन देवास जिलाध्यक्ष आनंदसिंह ठाकुर ने मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत देवास को ज्ञापन सौंपकर वेतन भुगतान पर लगाई गई रोक को गैर कानूनी करा देते हुए कहा है कि पूरे देश में मनरेगा का एक कनून है। यह मांग आधारित मजदूरी मूलक योजना है। योजनांतंग मजदूर परिवारों की काम के प्रति मांग के आधार पर उनको मनरेगा में मजदूरी ग्राम पंचायत द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। इन मांग आधारित नियमों का पूरी तरह से पालन पंचायत सचिवो और ग्राम रोजगार सहायकों द्वारा किया जा रहा है। जबकि मनरेगा योजना में बजट की समस्या है। इस विलंबित भूगतान प्रक्रियाओं के कारण मजदूरो का लगाव इस मांग आधारित मनरेगा योजना से मोह भंग हो गया है। ऐसी स्थिति में श्री ठाकुर ने कहा कि मजदूरो का रूझान नहीं होने से योजना ठप होने के कारगार है।

इसके लिये पंचायत सचिवो व्. सहा. को का वेतन रोककर उनके सम्पूर्ण परिवारो को डण्डीत नहीं किया जा सकता शासकीय कर्मी-कर्मचारी पंचायत सचिव- रोजगार सहा. का वेतन रोक कर बल् प्रूक कार्य करने के लिये मजबूर करना राज्य के अच्छे नियोका को शोभा नहीं देता शीघ्र ही इस गैर कानूनी वेतन रोकने के आदेश को निरस्त कर वेतन भुगतान नही किया जाता है।तो जिते भर की ग्राम पंचायतों में पंचायत सचिव व रोज. सहा. द्वारा काम बंद कलम बंद कर जमपद प्राणोको में बैठ कर आंदोलन किया जाएगा। इसी आशय का ज्ञापन जनपद पंचायत कन्नौद के पंचायत सचिव व रोज सहा. ने अनुविभागीय अधिकारी राज्यस्व कन्नौद श्री प्रजापति को सौंपकर शीघ्र वेतन भुगतान कराने कि मांग कि है।

इस अवसर पर पंचायत सचिव संगठन के ब्लाक अध्यक्ष शंकरलाल जाणी, धर्मेन्द्र जोशी, विनोद मेहन्दिya, हेमराज सांवले, दुर्गा प्रसाद गुर्जर, ईश्वर मण्णोई, सतीष धानवे, कुलदीप जाट आदि उपस्थित थे।

स्वास्थ्य सेवाओं का सशक्तिकरण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

पीएम-जनमन अभियान के अंतर्गत 66 मोबाइल मेडिकल यूनिट का किया शुभारंभ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वास्थ्य सेवाओं का सशक्तिकरण प्रदेश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। हमारा लक्ष्य है कि प्रदेश के प्रत्येक कोने तक उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचे, हर ज़िले में मेडिकल कॉलेज हों, अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध हों और पर्याप्त स्वास्थ्य अमला हो। उन्होंने कहा कि 46 हजार से अधिक स्वास्थ्य अमले की भर्ती के लिये स्वीकृति दी जा चुकी है। उन्होंने शीघ्र भर्ती प्रक्रिया पूरा करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सशक्त स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा से कोई भी क्षेत्र विकास की छलांग लगाने के लिये तैयार होता है। सशक्त और विकसित प्रदेश के लिये इन क्षेत्रों का सशक्त होना ज़रूरी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समत्व भवन से 'पीएम जनमन अभियान' के तहत 66 मोबाइल मेडिकल यूनिट (एमएमयू) को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये मोबाइल मेडिकल यूनिट प्रदेश के दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की सहज और सुलभ उपलब्धता का कार्य करेंगी।

संसाधनों की कमी नहीं होने दी जायेगी- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मोबाइल मेडिकल यूनिट्स दुर्गम और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित क्षेत्रों में पहुँचकर आमजन को



ओपीडी, रोग निदान, उपचार और दवाइयों जैसी आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करेंगे। प्रत्येक यूनिट में प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मी और अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरण उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस पहल से प्रदेश के स्वास्थ्य मानकों में बड़ा सुधार देखने को मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के सशक्तीकरण के लिये संसाधनों की कमी नहीं होने दी जायेगी। मध्यप्रदेश को स्वास्थ्य क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिये हम संकल्पबद्ध हैं।

87 विकासखण्डों के 1268

ग्रामों में पहुँचेगी यूनिट- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि मोबाइल मेडिकल यूनिट्स (एमएमयू) से 21 जिलों के 87 विकासखंडों में 1268 ग्रामों के लगभग 3,12,246 लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी। योजना में चिन्हित जिले अनुपपुर, अशोकनगर, बालाघाट, छिन्दवाड़ा, दतिया, डिंडोरी, गुना, गवालिपर, कटनी, मंडला, मुरैना, नरसिंहपुर, संताना, शहडोल, श्यापुर, सीधी, शिवपुरी, जबलपुर, रायसेन, उमरिया और बिदिशा शामिल हैं।

मोबाइल मेडिकल यूनिट दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा प्रदाय में

श्रीमंत ट्रॉफी मिस्टर मध्य प्रदेश बाँटी बिल्डिंग चैंपियनशिप

मोहम्मद अल्लाफ बने मिस्टर एमपी, पुष्पेन्द्र ठाकुर ने जीता मिस्टर देवास का खिताब



देवास। देवास जिला बाँटीबिल्डिंग एसो. द्वारा आयोजित श्रीमंत ट्रॉफी मिस्टर मध्य प्रदेश चैंपियनशिप 5 जनवरी 2025 को स्थानीय सयाजी गेट पर आयोजित की गई। जानकारी देते हुए एसोसिएशन अध्यक्ष रेखन शेख ने बताया कि पूरे मध्य प्रदेश से इस चैंपियनशिप में भाग लेने लगभग 200 से ऊपर बाँटीबिल्डर देवास पहुंचे थे। बाँटीबिल्डरों के रुकने और खाने की व्यवस्था एसो. द्वारा ही की गई थी। प्रतियोगिता शाम को शुरू हुई जो देर रात तक जारी रही।

जन- गण- मन के साथ इस चैंपियनशिप का शुभारंभ किया गया। सबसे पहले मिस्टर देवास बाँटी बिल्डर चैंपियनशिप शुरू हुई। देवास के लगभग 30 से ऊपर बाँटीबिल्डर ने मिस्टर देवास बाँटी बिल्डर बनने के लिए इस चैंपियनशिप में हिस्सा लिया और स्टेज पर अपनी मांसपेशियों का जानदार प्रदर्शन किया। निर्णायकों द्वारा टॉप टेन बाँटीबिल्डर चुने गए, जिसमें से टॉप 4 को पुरस्कार दिए गए। चौथे स्थान पर बेस्ट इंफ्रूव बाँटी संजय कंक, तीसरे नंबर पर (बेस्ट मस्क्यूलर बाँटी) सईद खान, दूसरे नंबर पर चेतन भन्नारे (बेस्ट पोजर बाँटी) और पहले स्थान पर पुष्पेन्द्र ठाकुर ने जीत दर्ज कर मिस्टर देवास (चैंपियन ऑफ चैंपियन) का खिताब जीता। इस दौरान अतिथि के रूप में उपस्थित सभापति रवि जैन ने विजेता खिलाड़ियों

को ट्रॉफी और नगद राशि से पुरस्कृत किया।

मिस्टर देवास के बाद मिस्टर मध्य प्रदेश का मुकामला शुरू हुआ, जिसमें 200 से ऊपर बाँटीबिल्डर ने विभिन्न वेट कैटेगरी में अपना प्रदर्शन किया। हर कैटेगरी के विजेता बाँटीबिल्डर ने अंत में मिस्टर मध्य प्रदेश बाँटीबिल्डर चैंपियनशिप में हिस्सा लिया। सर्द हवाओं में बाँटीबिल्डरों ने अपनी मांसपेशियों का शानदार प्रदर्शन कर दर्शकों को देर रात तक बांधे रखा।

निर्णायकों की भूमिका अतिन तिवारी, प्रेम सिंह यादव, जितेंद्र सिंह कुशवाह, शोलेन्द्र व्यास, अमित कर्नोजिया, माजु कुरेशी, आशीष टोक, मकबूल वारसी, कुलदीप त्रिवेदी, अर्जुन पंडित, साजिद खान ने निभाई।

मिस्टर मध्यप्रदेश चैंपियनशिप के विभिन्न वेट कैटेगरी के खिलाड़ियों के बीच हुए मुकाबले में चैंपियन ऑफ चैंपियन श्रीमंत ट्रॉफी मिस्टर मध्य प्रदेश पर भोपाल के मोहम्मद अल्लाफ ने अपना कब्जा किया। उन्होंने सभी खिलाड़ियों को पीछे छोड़ते हुए इस खिताब को अपने नाम किया और वह मिस्टर मध्य प्रदेश बने। इसी के साथ भोपाल के हाशिम अली को बेस्ट इंफ्रूव बाँटी, नर्मदापुरम के मिर्जा जमाल को बेस्ट मस्क्यूलर बाँटी, भोपाल के अखरार हुसैन को बेस्ट पोजर बाँटी का खिताब दिया गया। इन सभी विजेताओं को ट्रॉफी और नगद

पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।चैंपियनशिप में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों को भी पुरस्कृत किया गया।

पूरी प्रतियोगिता में कुल 139,000 के नगद पुरस्कार का वितरण किया गया। एसो. द्वारा इस आयोजन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले साथियों को खेल मित्र अवॉर्ड से भी पुरस्कृत किया गया। निर्णायकों को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विधायक सोनकच्छ राजेश सोनकर ने सम्मिलित होकर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। जिला बाँटीबिल्डिंग एसो. के अकबर शेख (अज्जू), अध्यक्ष रेहन शेख, सचिव मनदीप सिंह पंवार, कोषाध्यक्ष रोहन वर्मा, खुमान सिंह बैस, खालिक शेख (चाचा), वीरेंद्र सिंह ठाकुर,चेतन राठौड़, चेयरमैन पंडित आशीष शर्मा, भास्कर बेस (सह सचिव), सम्राट सोनी, अंकित दुबे, जीशान शेख, प्रमोद चौहान, नीरज गेहलोद, निखिल ठाकूर, कुलदीप ठाकुर, शाबाजु खान, अभिजीत सिंह बैस, मुर्तजा सैफी, साहिल शेख, शुभम विश्वकर्मा, अमन बैग, मलिक शेख, आदि ने खिलाड़ियों को बधाई प्रेषित की। चैंपियन का सफल संचालन चंद्रपाल सिंह सोलंकी (छोटू) ने किया। उक्त जानकारी जिला बाँटी बिल्डिंग एसो. के मीडिया प्रभारी चेतन राठौड़ ने दी।

मध्य प्रदेश एवं हरियाणा विस की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज समिति की संयुक्त बैठक

भोपाल। मध्य प्रदेश एवं हरियाणा विधानसभा की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज संस्थाएं समिति की संयुक्त बैठक आज विधानसभा भवन भोपाल में संपन्न हुई।

बैठक में विशेष रूप से आमंत्रित मध्य प्रदेश शासन के संसदीय कार्य एवं नगरीय विकास विभाग मंत्री, श्री कैलाश विजयवर्गीय ने हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष एवं समिति के सभापति तथा मध्य प्रदेश की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज संस्थाएं समिति के सभापति के मध्य प्रदेश शासन के नगरीय विकास विभाग द्वारा संचालित



योजनाओं की जानकारी साझा की।

संयुक्त बैठक के आरंभ में मध्य प्रदेश विधानसभा के प्रमुख सचिव श्री अवधेश प्रताप सिंह ने श्री कैलाश विजयवर्गीय, आंगतुक समिति के सभापति एवं हरियाणा विधानसभा उपाध्यक्ष श्री किशन लाल मिश्रा, मध्य प्रदेश विधानसभा सभा की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज संस्थाएं समिति के सभापति श्री रमेश मेढोला का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया तथा सचिव श्री अरविंद शर्मा ने हरियाणा विधानसभा के सदस्य सर्वश्री रणधीर पनिहार एवं मोहम्मद सिराज का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया ।तत्पश्चात दोनों समितियों के संबंध में विचार-विमर्श कर जानकारीयों का आदान-प्रदान किया गया । इस अवसर आंगतुक समिति को मध्य प्रदेश विधानसभा का स्मृति चिन्ह एवं अन्य प्रकाशन भी भेंट किया गया। संयुक्त बैठक में मध्य प्रदेश विधानसभा की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज संस्थाएं समिति के सदस्य सर्व श्री अशोक ईश्वरदास रोहणी, विश्वामित्र पाठक, डॉ राजेश सनकर, दिव्यराज 7सिंह, डॉ सतीश सिकरवार, हरियाणा विधानसभा के अधिकारी के साथ ही नगरीय विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री संजय शुक्ल भी उपस्थित रहे ।

साइबर सेल ने 25 लाख रुपए के गुम मोबाइल खोजे

खोजकर मोबाईल मालिकों को दिया नववर्ष का उपहार, पूरे साल में 75 लाख के 440 मोबाईल खोजकर लौटाये

देवास/मोहन वर्मा। पुलिस अधीक्षक देवास को लगातार मोबाइल गुमने संबंधी आवेदन पत्र प्राप्त हुये थे।जिन पर कार्यवाही करते हुये पुलिस अधीक्षक देवास द्वारा सायबर सेल निर्देशित किया गया । पुलिस अधीक्षक देवास श्री पुनीत गेहलोद के निर्देशन में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक देवास (शहर) श्री जयवीर सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में सायबर सेल देवास द्वारा गुमे हुये कुल 150 मोबाइल कीमती लगभग 25 लाख रुपये के खोजे गये हैं

सभी गुम हुए मोबाइल को नववर्ष के उपहार के रूप में आज दिनांक 06.01.2025 को पुलिस कंट्रोल रूम देवास में एक कार्यक्रम आयोजित कर पुलिस अधीक्षक देवास एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक देवास (शहर) द्वारा संबंधित मोबाइल स्वामियों को वितरित किये गए । साथ ही सायबर सुरक्षा एवं जागरूकता के संबंध मे जनता को जागरूक किया गया ।

सायबर सेल देवास द्वारा लगातार गुमे हुये मोबाइल फोन को खोजा जाकर वास्तविक स्वामियों को पहुँचाये जाते है जिसमें वर्ष 2024



में फरवरी में 160, अप्रैल में 130 एवं आज 150 सहित कुल 440 गुमे हुये मोबाइलो को खोजने में पुलिस सायबर सेल टीम देवास से उर्जित कपिल नरवले, प्रअर सचिन चौहान, शिवप्रताप सिंह, मप्रअर गीतिका कानूनगो, मुर्तजा कर्नल, आर योगेश कदम, सोनू कुमार, मअर आरती सिंह, नैना खान, आर राहुल बडोले,मोनू राणावत,मअर निशा पाटीरिया, ज्योति कुमावत का विशेष

योगदान रहा । पुलिस अधीक्षक द्वारा साइबर सेल की टीम को नगद इनाम से पुरस्कृत करने की घोषणा की है ।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024 में साइबर सेल द्वारा लगभग 400 मोबाइल कीमती लगभग 75 लाख रुपये के खोजकर आवेदकों को वापस किए हैं मोबाइल पाकर आवेदकों ने पुलिस अधीक्षक एवं सायबर सेल टीम को धन्यवाद दिया।

31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का हुआ समापन

यह कार्यक्रम भविष्य के वैज्ञानिकों को तैयार करने का एक महत्वपूर्ण कदम : डॉ. अनिल कोटारी

भोपाल। 31वें राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का समापन समारोह भोपाल के रवींद्र भवन में उल्लास, जोश और वैज्ञानिक ऊर्जा के साथ सम्पन्न हुआ। चार दिवसीय इस आयोजन ने स्वास्थ्य और कल्याण के लिए पारिस्थितिकी तंत्र की समझ थीम पर विज्ञान और नवाचार को केंद्र में रखते हुए हजारों छात्रों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया। 31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. राजीव त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि के रूप में विज्ञान भारती के राष्ट्रीय सह संगठन सचिव श्री प्रवीण रामदास, राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान भोपाल के निदेशक डॉ सी सी त्रिपाठी के साथ साथ एन सी एस टी सी, डी एस टी की प्रमुख डॉ रश्मि शर्मा एवं मेमेकार्ग के महानिदेशक डॉ अनिल कोटारी माननीय मुख्यमंत्री के सांस्कृतिक सलाहकार श्री श्रीराम



तिवारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रमुख तथ्य- कार्यक्रम में कुल 640 छात्रों ने भागीदारी की जिसमे 194 प्रोजेक्ट मॉडल प्रस्तुत किये गए। इसमें 10 अंतरराष्ट्रीय नवाचार मॉडल भी थे। 376 छात्राओं ने अपने वैज्ञानिक मॉडल्स के माध्यम से भागीदारी की। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 28 राज्यों और 6 देशों के बच्चों ने भाग लिया। 16 सत्रों में विज्ञान के विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों ने बच्चों के प्रश्नों के उत्तर दिए और उन्हें भविष्य

का लाइव प्रदर्शन किया गया। लखन प्रजापति द्वारा पोर्ट्रेट प्रदर्शनी: विज्ञान और कला का अनोखा संगम देखने को मिला। विभिन्न विद्यालयों के प्रोजेक्ट मॉडल: छात्रों ने स्वास्थ्य, पर्यावरण संतुलन, ऊर्जा संरक्षण, जैव विविधता और सतत विकास पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए। छत्तीसगढ़, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, त्रिपुरा और दिल्ली के छात्रों को विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए।

राइट विलक

सड़कों पर क्यों ठोकें खाता है सरकारी नौकरी का ख्वाब ?



अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के
कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क:-
9893699939
ajayborkil@gmail.com

बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) के परीक्षार्थियों का प्रारंभिक परीक्षा रद्द करने का आंदोलन तीन हफ्ते के भी बाद भी समाप्त नहीं हो रहा है तो इसको लेकर कई सवाल उठने लगे हैं। पहला तो यह राज्यों में सरकारी नौकरी पाने का युवाओं का ख्वाब अमूमन इस तरह सड़कों पर दर-दर की ठोकें खाते पर क्यों मजबूर है? दूसरे, देश के अधिकांश राज्य लोक सेवा आयोग अक्षमता के शिकार हैं, ऐसा क्यों? उनके द्वारा भर्ती किए जाने वाले कल के अफसरों और अन्य कर्मचारियों के चयन की शुचिता क्यों नहीं रह पाती है? ऐसा होने के लिए जिम्मेदार कौन है, सरकारी नौकरी का सपना देखने वाले या फिर इन रूआबदार नौकरियों के लिए परीक्षा आयोजित करने वाले तीसरे, इन धांधलियों पर लगाम कब लगेगी और कौन लगाएगा?

बीपीएससी की 70वीं संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा (सीपीई) के पेपर लीक होने की खबर के बाद से गुस्साए परीक्षार्थी सड़कों पर उतरे हुए हैं और पटना के गर्दनीबाग में धरना दे रहे हैं। गड़बड़ी की गंभीर शिकायतों के बीच बीपीएससी ने 4 जनवरी को री-एग्जाम (पुनर्परीक्षा) भी आयोजित की, लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ। क्योंकि परीक्षार्थियों को बीपीएससी पर ही भरोसा नहीं है। (हालांकि किसी संस्था पर से भरोसा उठ जाना भी समस्या के समाधान में मददगार नहीं होता)। व्यवस्था और तंत्र पर आपको कुछ तो यकीन रखना ही होगा। बीपीएससी ने इतना जरूर माना कि बापू परिसर परीक्षा केन्द्र पर पेपर लीक हुआ। लेकिन उसने समूची परीक्षा रद्द करने से इंकार कर दिया। शक यह भी है कि परीक्षार्थियों के सड़कों पर उतरने के पीछे कोचिंग क्लास माफिया का हाथ है। क्योंकि वो सभी प्रतियोगी परीक्षाएं अपनी सुविधा और स्वार्थ के हिसाब से करवाना चाहते हैं। न होने पर आंदोलन करवा देते हैं। उधर यह राजनीतिक मुद्दा भी बन गया है। शुरू में कुछ विपक्षी दलों ने आंदोलनकारी परीक्षार्थियों के साथ खड़ा दिखने की कोशिश की, लेकिन बाद में जन सुराज पार्टी के प्रशांत किशोर द्वारा आंदोलन को हाईजैक करता देख, दूसरे दलों ने इससे दूरी बना ली। सत्तारूढ़ एनडीए के घटक दल

तो इस आंदोलन को शुरू से प्रायोजित और नीतीश सरकार को बदनाम करने वाला बता रहे हैं। हालांकि कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अगर मामला नहीं सुलझा तो परीक्षार्थियों का यह आंदोलन मिनी अन्ना आंदोलन में भी तब्दील हो सकता है, जो सत्तारूढ़ एनडीए के लिए खतरे की घंटी है। क्योंकि बिहारी छात्रों में राजनीतिक चेतना वैसे भी दूसरों से ज्यादा है। लेकिन क्या सचमुच ऐसा होगा या फिर राज्य की नीतीश सरकार इसे जितना लटकाएगी, उतना ही आंदोलन स्वतः कमजोर होता जाएगा, इसका उत्तर मिलना अभी बाकी है। वैसे आंदोलनकारी परीक्षार्थियों का मानना है कि असल में खतरे की घंटी तो नीतीश सरकार के लिए है, क्योंकि राज्य में इसी साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। हालांकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इस आंदोलन को लेकर बेफिक्र दिखते हैं। उन्हें नहीं लगता कि प्रदेश के हजारों प्रतियोगी परीक्षार्थियों की नाराजगी आगामी विधानसभा चुनाव में उनके लिए पानीपत साबित हो सकती है। उनकी निगाह में यह आंदोलन भी बुलबुला है, जो फूट जाएगा। क्योंकि इस आंदोलन की हवा को चुनाव तक खींचना टेढ़ी खर है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में गड़बड़ियों को लेकर देश में अलग-अलग राज्यों में होने वाले विभिन्न आंदोलनों में बीपीएससी अभ्यर्थियों का आंदोलन अब तक का सबसे लंबा आंदोलन है। इसके पहले हमने उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में भी सरकारी नौकरियों के लिए आयोजित राज्य लोक सेवा आयोगों की परीक्षाओं में गड़बड़ी और मनमाने फैसलों के खिलाफ परीक्षार्थियों को सड़कों पर उतरते देखा है। इससे एक बात साफ है कि आजकल अपवादस्वरूप ही कोई प्रतियोगी परीक्षा पूरी तरह निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से होती है। कहीं नीयत में खोट है तो कहीं व्यवस्था में जबर्दस्त खामियां हैं। परीक्षा आयोजन में प्रौद्योगिकी का बढ़ता इस्तेमाल उसकी शुचिता, पारदर्शिता और त्वरितता के लिए कम, हेराफेरी के लिए ज्यादा होता दिख रहा है। अब्बल तो राज्यों में सरकारी भर्ती के विज्ञापन ही कम निकलते हैं। निकले भी तो उसमें दस गलतियां होती है या जानबूझकर की जाती हैं। मान लीजिए कि

विज्ञापन के बाद प्रतियोगी परीक्षा की तारीखें घोषित हो भी गईं तो तय तिथि को परीक्षा हो जाए तो खुद को किस्मत वाला समझिए। अगर परीक्षा भी समय पर हो गई तो परीक्षा के पेपर लीक होना, पचें बिकना, फिर रिजल्ट बरसों लटक रहना, रिजल्ट भी आ जाए तो नियुक्ति पत्र मिलने के लिए बरसों इंतजार करने की मजबूरी अब आमबात हो गई है। केवल यूपीएससी की परीक्षाएं काफी हद तक बेहतर ढंग से हो रही हैं। वरना अन्य प्रतियोगी परीक्षा के अभ्यर्थियों को हर बात में इंसाफ के लिए या तो सड़कों पर आना पड़ता है या फिर कोर्ट की शरण लेनी पड़ती है। ऐसा क्यों हो रहा है, इसका न तो कोई जवाबदेह है और न ही किसी को इसकी चिंता है। जबकि यह देश के युवाओं के भविष्य से जुड़ा गंभीर मुद्दा है।

बीपीएससी की कहानी भी इससे अलग नहीं है। वहां बरसों बाद बड़े पैमाने पर द्वितीय श्रेणी के सरकारी पदों पर भर्तियां निकली थीं। लेकिन उसमें भी अफरा-तफरी हुई। बताया जाता है कि बीपीएससी में पेपर लीक का विवाद परीक्षा के बापू सेंटर से शुरू हुआ। वहां कुछ पेपर कम पड़ गए थे तो दूसरे केन्द्र से मांगवाने पड़े। जिससे कई परीक्षार्थियों को थोड़े समय के अंतर से पेपर मिले। यकीनन यह बीपीएससी की बड़ी लापरवाही थी। अगर आयोग पर्याप्त संख्या में परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र भी उपलब्ध नहीं करा सकता तो इसे क्या कहा जाए? इस बीच खबर फैली कि पेपर लीक हो चुका है। यह सुनते ही छात्र भड़क गए और उन्होंने पेपर का बहिष्कार कर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। इस बीच एक आंदोलनकारी को पटना डीएम ने तमाचा जड़ दिया। उधर बीपीएससी का कहना है कि मामला चूँकि एक ही सेंटर का था इसलिए पूरी परीक्षा रद्द करने का सवाल ही नहीं है। लेकिन इस दलील पर परीक्षार्थियों को भरोसा नहीं हो रहा। उनका आंदोलन उग्र हो गया तो पुलिस ने लाठियां भी बरसाईं। अब जन सुराज पार्टी के प्रशांत किशोर इस आंदोलन के पुरोधा बनकर अपनी सियासी जमीन तलाशने की कोशिश कर रहे हैं। इस बीच कुछ अन्य नेताओं जैसे तेजस्वी यादव आदि ने भी शुरू में आंदोलनकारियों से सहानुभूति जताई, लेकिन बाद में हाथ खींच लिया। अब परीक्षार्थियों का कहना है कि वे मुद्दे को लेकर हाई

कोर्ट जाएंगे।

कुलमिलाकर बिहार पीएससी परीक्षार्थियों को कोई राहत जल्द मिलेगी, ऐसा लगता नहीं है। हमने पिछले साल नवंबर में उत्तर प्रदेश पीएससी के परीक्षार्थियों का आंदोलन भी देखा,जो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हस्तक्षेप के बाद समाप्त हुआ था। वहां परीक्षार्थी यूपीपीएससी द्वारा नार्मलाइजेशन प्रक्रिया के बजाए पर्सटाइल पद्धति से परीक्षा कराने, पूरी परीक्षा एक ही पाली में कराने की मांग को लेकर आंदोलन पर उतरे थे। बता दें कि नॉर्मलाइजेशन से तात्पर्य किसी भी परीक्षा में परीक्षार्थियों की तादाद बहुत ज्यादा होने पर आयोजक दो पालियों में परीक्षा कराते हैं। ऐसे में अगर पहली पाली का पेपर कठिन आता है और उसमें अभ्यर्थियों के कम नंबर आते हैं तो दूसरी पाली का पेपर थोड़ा आसान होता है और उसमें अभ्यर्थियों के ज्यादा नंबर आते हैं तो कठिन पेपर वाली पाली के अभ्यर्थियों के नंबर में थोड़ी बढ़ोतरी कर दी जाती है। यही नॉर्मलाइजेशन कहलाता है। विरोध कर रहे अभ्यर्थियों का कहना था कि यह खेल के बीच नियम बदलने जैसा है और इसमें धांधली की पूरी गुंजाइश है। लिहाजा समूची परीक्षा एक ही पाली में कराई जाए। सवाल यह है कि जब यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा एक पाली में कराती है तो राज्य सेवा आयोग ऐसा क्यों नहीं कर सकते?

इसी तरह बीते दिसंबर में मप्र के इंदौर में 'नेशनल एजुकेटेड यूथ यूनियन' के बैनर तले एमपीपीएससी के अभ्यर्थियों ने न्याय यात्रा निकाली थी। उनकी मांग थी कि एमपीपीएससी की 2019 की मुख्यक परीक्षा की कॉपियां दिखाई जाएं और इसकी मार्कशीट जारी की जाए। साथ ही सभी विज्ञापित पदों पर एक साथ भर्ती की जाए। आंदोलनकारियों ने इंदौर में मप्र लोक सेवा आयोग के मुख्यालय पर धरना भी दिया। बाद में सरकार के दखल के बाद अभ्यर्थियों ने आंदोलन समाप्त किया। इसी तरह महाराष्ट्र में ठाकरे राज में महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग द्वारा प्रस्तावित परीक्षाएं कोरोना के कारण रद्द करने पर नाराज अभ्यर्थियों ने राज्यव्यापी आंदोलन किया था।



सुरवाया की गढ़ी, शिवपुरी

शिवपुरी से 20 किलोमीटर दूर स्थित सुरवाया की गढ़ी नरवर शहर के ऐतिहासिक रावों में से एक है। एक किले, तीन हिंदू मंदिरों, एक मठ और एक बावड़ी के अवशेषों के लिए उल्लेखनीय, किला परिसर को पहले 'सरस्वती पट्टम' कहा जाता था। मंदिरों में कई पत्थर की नक्काशीदार मूर्तियों में से एक सुंदर मूर्ति भगवान विष्णु की है जो गरुड़ पर सवार हैं। यहाँ की छत पर फूल उकेरे गए हैं, और खंभे पत्थर की नक्काशीदार मूर्तियों की सबसे आश्चर्यजनक वास्तुकला के साथ खड़े हैं। एएसआई ने सुरवाया की गढ़ी को राज्य के एक छिपे हुए विरासत रत्न के रूप में मान्यता दी, जो सुंदर कच्छ अपना खाता स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करता है। मध्य प्रदेश के शिवपुरी के पास एक छोटा सा किला छिपा हुआ है, जो वास्तुकला की चमक और सांस्कृतिक समृद्धि के भंडार से कम नहीं है। सुरवाया की गढ़ी मध्य प्रदेश की विरासत का एक छिपा हुआ रत्न है, जो राज्य के लिए आवश्यक है। शिवपुरी से 20 किमी दूर, शिवपुरी-झांसी रोड के पास, सुरवाया की गढ़ी नामक छोटा सा शहर स्थित है। एक शांत झील इस छोटे और विचित्र शहर के पुराने जमाने के आकर्षण को बढ़ाती है।

डेमोलाइट द्वारा पारिवारिक स्नेह मिलन समारोह का आयोजन

भोपाल। डिमॉन्स्ट्रेशन स्कूल भोपाल के पूर्व विद्यार्थियों का संगठन डेमोलाइट द्वारा रघुवर फॉर्म हाउस रायसेन रोड भोपाल में पारिवारिक स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर वर्ष 1968 से लेकर 1995 बैच तक के पूर्व विद्यार्थी अपने परिवारजनों के साथ शामिल हुए और अपनी स्कूल लाइफ में गुजारे हुए समय को अपने दोस्तों से सांथ याद किया। प्रकृति के खुश नुमा वातावरण के बीच किसी कहानियों के चले दौर

में सभी ने अपनी स्कूल समय की शरातों को भी एक दूसरे से साझा करते हुए जमकर डांस, मस्ती, धमाल मचाया, साथ ही स्नाइड भोजन का भी आनंद लिया। इस अवसर पर डिमॉन्स्ट्रेशन स्कूल के पूर्व छात्र और डेमोलाइट के सदस्य सेवानिवृत्त पूर्व अपर मुख्य सचिव, तथा वर्तमान चुनाव आयुक्त मध्यप्रदेश आईएसएस मनोज श्रीवास्तव जी का शॉल श्रीफल से सम्मान किया गया। इस अवसर पर डिमॉन्स्ट्रेशन पूर्व विद्यार्थी संगठन

डेमोलाइट के संरक्षक सदस्य श्री राजेंद्र सक्सेना, अध्यक्ष सतीश रायजादा, उपाध्यक्ष अजय शुक्ला, देवेंद्र साधो, कोषाध्यक्ष संजय कुर्दुशिया, महासचिव सुकांत जैन, केशव लालवानी, राजेन्द्र त्रिपाठी, संजीव श्रीवास्तव, वसीम खान, मनोज श्रीवास्तव, अरशद फारूक, सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, दीपक उपाध्याय, मुललीधर लालवानी, डी. डी. सेठिया, इंदर शरण, शशेंद्र लहरी, राजेंद्र पाठक आदि उपस्थित रहे।

एसीएस पीछे हटे

कभी राज्य सरकार की आंख, कान व नाक रहे अपर मुख्य सचिव स्तर के अधिकारी ने एक आयोग में अपने पुनर्वास के लिए उड़ाए कदमों को पीछे खींच लिया है। अपर मुख्य सचिव स्तर इस के अधिकारी ने आयोग में पुनर्वास के लिए शुरूआत में काफी जोर लगाया और इसके लिए लांबिंग भी की, लेकिन मौजूदा सरकार के कामकाज को लेकर एसीएस मन में अब निराशा घर कर गई। उन्होंने आयोग में पुनर्वास के लिए उड़ाए कदमों या कहे, दिये आवेदन को वापस ले लिया है। सूत्रों का कहना है कि एसीएस को अब को लगने लगा था कि आयोग में पुनर्वास के लिए उन्हें ऐसी चुनौतियां से रूबरू होना पड़ेगा, जो उनके स्वर्णिम काल में सामने आते तक नहीं थे। बता दें कि उक्त अपर मुख्य सचिव स्तर के अधिकारी इसी साल सेवानिवृत्त होने वाले हैं और कभी शासन की होने वाली बैठकों में सरकार के मुखिया एसीएस का बड़ी शिद्दत से नाम लेकर बुलाते थे।

जल्द गिरेगी सीई पर गाज

लोक निर्माण विभाग के एक मुख्य अभियंता पर जल्द ही गाज गिरने वाली है। रंगीले मुख्य अभियंता का रंगीन मिजाज फोटो इन दिनों विभाग में सिविलिंग पूल में उठती कुत्रिम लहरों की तरह हिलोते मार रहा है। बताया जाता है कि सीई साहब ने नवागत पंजीकृत महिला ठेकेदार को तमाम नियमों को ताक में रखकर करोड़ों का भुगतान कर दिया और अपने मातहत अधिकारियों को भी इस अनियमित भुगतान में भागीदारी के लिए दबाव बनाने लगे। मातहत अधिकारियों ने इसकी शिकायत उच्च स्तर पर कर दी और मामला सीएम सचिवालय तक पहुंच गया। विभाग के सूत्र बताते हैं कि सीई पर जल्द ही गाज गिरने वाली है और उनके द्वारा नियम विरुद्ध स्वीकृत किए गए करोड़ों के देयकों जांच भी होगी।

खेल गतिविधियां जीवन में सकारात्मकता का संचार करती हैं : मुख्यमंत्री डा यादव नई शिक्षा नीति के माध्यम से स्पोर्ट्स टीचर्स भी बन सकेंगे वाइस चांसलर

मुख्यमंत्री ने 30वें इंटर प्रेस क्रिकेट टूर्नामेंट का किया शुभारंभ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि खेल गतिविधियां जीवन में सकारात्मकता और ऊर्जा का संचार करती हैं। भारतीय संस्कृति में खेलों की समृद्ध और उत्कृष्ट परम्परा रही है। नई शिक्षा नीति के माध्यम से खेल के आधार पर डिग्री प्राप्त करने और स्पोर्ट्स टीचर को असिस्टेंट प्रोफेसर से लेकर वाइस चांसलर तक बनने की व्यवस्था स्थापित की गई है। खेल, व्यक्ति की दक्षता, क्षमता और योग्यता के प्रकटीकरण के प्रभावी माध्यम है। राज्य शासन प्रत्येक स्तर पर खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयत्नबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश में सभी खेलों को प्रोत्साहित कर प्रतिभाओं को निखारने के लिए आवश्यक व्यवस्था स्थापित की है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में इसके परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं। भोपाल में बेहतर क्रिकेट स्टेडियम विकसित करने की दिशा में प्रयास किए

जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भोपाल के खेल पत्रकार संघ द्वारा आयोजित 30 वें इंटर प्रेस क्रिकेट टूर्नामेंट-2025 के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने



ओल्ड केम्पियन ग्राउंड पर बल्लेबाजी कर टूर्नामेंट की शुरुआत की। इस अवसर पर खेल मंत्री श्री विश्वास सारंग, पूर्व विधायक श्री ध्रुव नारायण सिंह, सहित संघ के पदाधिकारी, मीडिया कर्मी एवं खेल प्रेमी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टूर्नामेंट के सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं।

धोती-कुर्ता पहनकर खेल रहे क्रिकेट, संस्कृत में कमेंट्री

भोपाल में ग्राउंड पर यज्ञशाला जैसा नजारा, 19 टीमें खेलने आई टूर्नामेंट

भोपाल। भोपाल के शिवाजी नगर स्थित अंकुर खेल ग्राउंड पर सोमवार को क्रिकेट मैच का नजारा बिल्कुल अनोखा था। खिलाड़ियों ने क्रिकेट की जर्सी की जगह धोती-कुर्ता पहन रखा था और हिंदी या अंग्रेजी के बजाय संस्कृत में कमेंट्री हो रही थी। माहौल ऐसा था, मानो यह क्रिकेट का मैदान नहीं बल्कि कोई यज्ञशाला हो। हर खिलाड़ी धोती-कुर्ता के साथ मस्तक पर त्रिपुंड और तिलक लगाए हुए था। गले में रुद्राक्ष की माला पहने हर खिलाड़ी का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। पिच पर रन लेने के दौरान भी सिर्फ संस्कृत भाषा का उपयोग हो रहा था। भोपाल में



सोमवार, 6 जनवरी से महर्षि मैत्री मैच श्रृंखला-5 की शुरुआत हुई। आचार्य वेणीप्रसाद वरिष्ठ ने बताया कि महर्षि मैत्री समिति ने यह आयोजन किया है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण भी गेंद का खेल खेलते थे। सदियों से क्रिकेट जैसी खेल परंपरा चली आ रही है। यह सांस्कृतिक और पारंपरिक खेल है, जो विचार और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है। इसलिए पिछले 5 सालों से यह आयोजन हो रहा है। आयोजन समिति के अवनीश त्रिवेदी ने बताया कि इस बार पूरे मध्यप्रदेश से 19 टीमें आई हैं। धोती-कुर्ता

में कर्मकांडी ब्राह्मण मैच खेल रहे हैं। पहला मैच आचार्य पाणीगुही चतुर्वेदी संस्कृत वेद पाठशाला और लक्ष्मीनारायण वैद्य विद्यालय के बच्चों के बीच हुआ,

जिसमें आचार्य पाणीगुही चतुर्वेदी संस्कृत वेद पाठशाला की टीम विजेता रही। सोमवार, 6 जनवरी से महर्षि मैत्री मैच श्रृंखला-5 की शुरुआत हुई। आचार्य वेणीप्रसाद वरिष्ठ ने बताया कि महर्षि मैत्री समिति ने यह आयोजन किया है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण भी गेंद का खेल खेलते थे। सदियों से क्रिकेट जैसी खेल परंपरा चली आ रही है। यह सांस्कृतिक और पारंपरिक खेल है, जो विचार और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है। इसलिए पिछले 5 सालों से यह आयोजन हो रहा है। आयोजन समिति के अवनीश त्रिवेदी ने बताया कि इस बार पूरे मध्यप्रदेश से 19 टीमें आई हैं। धोती-कुर्ता

पधारो म्हारा मध्यप्रदेश

एमपी अजब है-गजब है की टेग लाइन से आगे बढ़कर मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने नव वर्ष में प्रदेश की जनता के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। सीएम ने नववर्ष में प्रदेश और देश के पर्यटकों से पधारो म्हारा मध्यप्रदेश का संदेश दिया है। प्रदेश का मुखिया होने के नाते मुख्यमंत्री डॉ यादव ने नए वर्ष की शुरुआत महाकाल दर्शन और मध्य प्रदेश में सतपुड़ा की रानी पर्यटक स्थल पचमढ़ी में सपरिवार दिन बिताकर की।



मोठन का मंत्रालय

हर मंगलवार
आशीष चौधरी

पचमढ़ी में भोलेनाथ जी के दर्शन किए और पचमढ़ी की वादियों को नजदीक से निहार। साथ ही प्रसिद्ध महुई वन्य जीव पर्यटन स्थल का भ्रमण कर प्रदेश की जनता को मेसेज देने का प्रयास किया है कि नए वर्ष में अपना प्रदेश छोड़ कर अन्य स्थानों पर मनोरंजन के लिए जाने के बजाय मध्य प्रदेश में ही इतने पर्यटन स्थल हैं, जहां पर्यटकों को नए वर्ष की शुरुआत में जाने से परहेज नहीं होना चाहिए। इससे न केवल स्थानीय पर्यटन बढ़ेगा, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। मध्य प्रदेश धार्मिक पर्यटन से तो समृद्धशाली है ही, वहीं मध्य प्रदेश में वन्य पर्यटन स्थल भी देश में सर्वाधिक है। जब प्रदेश का पर्यटक इस ओर प्रेरित होगा तो अन्य राज्यों के पर्यटक भी मप्र की ओर रुख करेंगे। मुख्यमंत्री की इस पहल को सभी ने सराहा है। बस इंतजार है आपको परख का।

यहां भी चला शिवराज का जादू

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान का जादू प्रदेश में कम होने का नाम नहीं ले रहा है। बीते दिनों खजुराहो में केन बेतवा नदी जोड़े राष्ट्रीय परियोजना की आधारशिला कार्यक्रम में देखने को मिला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंचासीन अतिथियों का क्रम से नाम लिया तो कार्यक्रम में मौजूद हजारों की जनता ने अभिवादन भी किया, लेकिन जब प्रधानमंत्री मोदी ने मंच पर मौजूद केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान का नाम लिया तो मौजूद जनता ने शिवराज का जोरदार करतल ध्वनि से न केवल स्वागत किया, बल्कि मामा..... मामा..... के नारे लगाकर सभा को गुंजित भी कर दिया। यह देखकर प्रधानमंत्री भी कुछ क्षणों के लिए रुक गए। यह बात अलग है कि प्रधानमंत्री ने मंच पर मौजूद एक पदाधिकारी का नाम नहीं लिया केवल सांसद कह कर संबोधित किया। इससे उनके समर्थकों में थोर निराशा भी देखी गई। राजनीतिक हल्कों में इसके कई मायने निकाले जा रहे हैं।

ई-फाइलिंग बनी मुसीबत !

नए वर्ष यानी की 1 जनवरी से मध्य प्रदेश के प्रशासनिक मुख्यालय वल्लभ भवन में ई-फाइलिंग की व्यवस्था लागू की गई है। प्रशासनिक कामकाज में गोपनीयता बनाए रखने के लिए लागू की गई की फोिलिंग व्यवस्था से मंत्रालय का स्टॉफ अभी पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं हुआ है और रोजमर्रा के काम में उन्हें ई फाइलिंग के जरिए आगे बढ़ाने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। मंत्रालय के सीनियर अधिकारियों का कहना है कि फाइल का हर मूवमेंट ई-फाइलिंग प्रोसेस में दर्ज किया जाए, लेकिन मंत्रालय का पुराना स्टॉफ इसको कर नहीं पा रहा है या कहे कि ई-फाइलिंग के लिए कंप्यूटर ऑपरेट करना उसके बस की बात नहीं है। चूंकि ई-फाइलिंग की मुख्य सचिव लगातार मॉनीटरिंग कर रहे हैं सो इसको लेकर कर्मचारियों को अधिकारियों की आए दिन नाराजगी का सामना करना पड़रहा है।